खंड 3
समकालीन अंतर्राष्ट्रीय संबंध

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 12 वैश्विक प्रतिरोध (वैश्विक सामाजिक आंदोलन और गैर–सरकारी संगठन)

संरचना

12.0 उद्देश्य

12.1 परिचय

12.2 वैश्विक प्रतिरोध

12.3 आधारभूत सैद्धांतिक योग

12.4 वैश्वीकरण का विरोध

12.5 वैश्विक सामाजिक आंदोलन

12.5.1 प्रतिरोध आंदोलन : सामाजिक आंदोलन के प्रकार

12.6 सामाजिक आंदोलन और गैर–सरकारी संगठन

12.7 सारांश

12.8 कुछ उपयोगी संदर्भ

12.9 प्रगति अभ्यास के उत्तर

12.0 उद्देश्य

यह इकाई वैश्वीकरण, वैश्विक प्रतिरोध, वैश्विक सामाजिक आंदोलनों और गैर सरकारी संगठनों की भूमिका पर केंद्रित है। इकाई के अध्ययन के बाद, आपको निम्नलिखित करने में सक्षम होना चाहिए :

- वैश्विक प्रतिरोध को परिभाषित करना
- वैश्विक प्रतिरोध में अंतर्निहित विभिन्न सैद्धांतिक योगों पर चर्चा करना
- वैश्विक सामाजिक आंदोलन एवं वैश्वीकरण पर उनके प्रभाव को समझना तथा
- वैश्विक सामाजिक आंदोलनों में गैर–सरकारी संगठनों की महत्वपूर्ण भूमिका का मूल्यांकन करना।

12.1 प्रस्तावना

वैश्वीकरण एवं इसका प्रतिरोध दोनों ही इक्कीसवीं सदी को परिभाषित करते हैं। वैश्विक प्रतिरोध एक सामाजिक आंदोलन है जिसका राजनीतिक उद्देश्य वैश्वीकरण की विकृतियों में बदलाव लाना और विरोध करना है। अक्सर इन आंदोलनों के ऐसे संस्करण होते हैं जो वैश्वीकरण की पूरी प्रक्रिया का विरोध करते हैं। इन्हें वैश्विक न्याय आंदोलन, वैश्वीकरण बदलाव आंदोलन, विश्व–विरोधी आंदोलन, कॉर्पोरेट विरोधी वैश्वीकरण आंदोलन या नवउदारवादी वैश्वीकरण विरोधीआंदोलन आदि के रूप संदर्भित किया जाता है। हालांकि, इनमें से अधिकांश शब्द आर्थिक वैश्वीकरण में विश्वास करनेवालों द्वारा दिए गए हैं और इसलिए ये प्रतिरोधियों के परिप्रेक्ष्य का

पर्याप्त वर्णन नहीं कर सकते हैं। इन आंदोलनों में भाग लेने वाले लोग अपनी आलोचनाओं का आधार कई संबंधित विचारों को बनाते हैं। इनकी आलोचनाओं का आधार उदार वित्तीय/व्यापार संस्थानों (जैसे आईएमएफ, डब्ल्यूटीओ, ओईसीडी) का विरोध, धन के माध्यम से बेलगाम राजनीतिक शक्ति वाले बड़े अंतर्राष्ट्रीय निगमों का विरोध,सांस्कृतिक विचारों की हानि और पर्यावरण को नुकसान भी हो सकता है। उनका मानना है कि वैश्वीकरण ने राष्ट्रीय विधायी प्राधिकारियों की अखंडता को कमजोर कर दिया है, और पूंजीवादी निगमों के अनुरोध पर उदार सूक्ष्म और वृहद आर्थिक नियम बनाने वाली प्रक्रियाओं द्वारा कई देशों की स्वतंत्रता और संप्रभुता का उल्लंघन किया गया है। प्रौद्योगिकी ने दोनों, वैश्वीकरण की ताकतों के साथ–साथ इसका विरोध करने वाली ताकतों ,की मदद की है। राज्यों के नियंत्रण से परे तीव्र और तत्काल अंतर–संचार ने प्रतिरोधियों को प्रतिकूल प्राधिकारियों से एक कदम आगे रहने के लिए सशक्त बनाया है। हम शीत युद्ध की समाप्ति के बाद से दुनिया भर में बढ़ते लोकप्रिय प्रतिरोध आंदोलन के गवाह हैं, जैसे सबसे हाल ही में अरब स्प्रिंग विरोध, इराक के आक्रमण के खिलाफ दुनिया का सबसे बड़ा समन्वित युद्ध विरोधी आंदोलन, से लेकरऑक्युपाई वॉल स्ट्रीट आंदोलन के उदय और दुनिया भर में स्वदेशी प्रतिरोध आंदोलन के उदय तक। वैश्वीकृत दुनिया को जलवायु परिवर्तन, आतंकवाद, गरीबी और आर्थिक संकट जैसी नई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। इन चुनौतियों की कोई सीमा नहीं है और किसी भी देश या अंतर–सरकारी संस्थानों द्वारा इनको हल नहीं किया जा सकता है। इन्हें केवल उन बलों के समन्वित प्रयासों द्वारा हल किया जा सकता है जो वैश्वीकरण में समाधान चाहते हैं और जो इस प्रक्रिया का विरोध करते हैं।

12.2 वैश्विक प्रतिरोध

वैश्वीकरण का वर्तमान प्रतिरोध यह है कि यह एक साथ इसका विरोध करने और इसमें सुधार लाने की दिशा में कार्य करता है। कुछ सामाजिक विचारधारायेंप्रत्यक्ष और भागीदारी वाले लोकतंत्र एवं स्वायत्त समुदायों (कभी कभार ये ''स्थानीय विनिमय व्यापार प्रणाली'' जैसी वैकल्पिक आर्थिक संरचनाओं का उपयोग भी करते हैं) के लिए काम करती हैं जब कि कुछ दूसरी वास्तविक प्रतिनिधितात्मक और लोकतांत्रिक जवाबदेही वाली अंतर्राष्ट्रीय राजनैतिक संरचना का समर्थन करती हैं। (वैश्वीकरण का विरोध : ऐसा शीत युद्ध के बाद वैश्विक परस्पर जुड़ाव की तेज प्रक्रिया के प्रकाश में दुनिया भर में लोकतंत्रीकरण के लिए मांगों के प्रसार की पृष्ठभूमि के खिलाफ हुआ है। (कुमार चंचल और अन्य 2017 : 70) इन विरोधों, ने अक्सर तारीख, जिस पर वे हुईं (जैसे, जे 16 के लिए ''16 जून'') या केंद्रीय शहर, जो कब्जा कर लिया गया है (जैसे, ''सिएटल के लिए लड़ाई'') का नाम ले लिया है, ने लगभग हर प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय राजनैतिक और आर्थिक बैठक के परिणाम स्वरूप उत्पन्न होना जारी रखा है। इसके अतिरिक्त, 9/11 के बाद से, वैश्वीकरण विरोधी आंदोलन तेजी से पश्चिम एशिया में अमेरिका और ब्रिटेन के सैन्यवादी नीतियों को लक्षित करने वाले युद्ध विरोधी मूलभूत आंदोलन से जुड़ गया है। मैरी कालडोर का तर्क है कि ''वैश्विक नागरिक समाज (जीसीएस) वैश्वीकरण को ''सभ्य'' या लोकतांत्रिक बनाने की प्रक्रिया है जिसके माध्यम से समूह, आंदोलन और व्यक्ति कुछ हद तक कानून, वैश्विक न्याय और वैश्विक सशक्तिकरण के वैश्विक नियम की माँग कर सकते हैं।" जीसीएस की पहचान ''परिवार, बाजार और राज्य के संस्थागत परिसरों से बाहर स्थित विचारों,

मूल्यों, नेटवर्क और व्यक्तियों के क्षेत्र के रूप में की जाती है, और राष्ट्रीय समाजों, राजनीति और अर्थव्यवस्थाओं के दायरे से परे है'' (कालडोर, 2000)।

अपनी प्रगति की जांच करें अभ्यास 1

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का प्रयोग करें।

ii) इकाई के अंत में अपने उत्तर के लिए सुझाव देखें।

2) समझाएँ कि वैश्वीकरण और वैश्विक प्रतिरोध वर्तमान सदी को कैसे परिभाषित करते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

12.3 आधारभूत सैद्धांतिक योग

जेके गैलब्रेथ द्वारा विकसित 'प्रतिकारी शक्ति' के सिद्धांत के माध्यम से वैश्विक नागरिक समाज के उद्‌भव की व्याख्या सबसे अच्छी तरह की जा सकती है। उनके विचार से, उद्‌गामी वैश्विक नागरिक समाज वैश्वीकरण प्रक्रिया के भीतर कॉर्पोरेट हितों के कथित वर्चस्व पर सीधी प्रतिक्रिया है। इसलिए वैश्विक नागरिक समाज का उदय नव उदारवाद की जीत के खिलाफ प्रतिक्रिया का हिस्सा है (बुजान, 2004)। कुछ ऐसे विद्वान हैं जो सामाजिक प्रतिरोध को राजनीतिक कार्यों के रूप में देखते हैं। उदाहरण के लिए, गिल्स (2000 : 4) सामाजिक प्रतिरोध को "राजनीतिक कार्रवाई जो सामान्य या सामाजिक हित का प्रतिनिधित्व करनेवाला एवं राजनीतिक स्थिति को बदलने और एक वास्तविक विकल्प का उत्पादन करने की क्षमता वाला है" के रूप में परिभाषित करते हैं। फिर कुछ अन्य विद्वान हैं जो वैश्विक प्रतिरोध को वैश्वीकरण के लिए एक सांस्कृतिक प्रतिक्रिया के रूप में देखते हैं। चिन और मिट्टेल्मैन (2000 : 30) लिखते हैं "प्रतिरोध आंदोलनों को पूरी तरह से वैश्वीकरण के लिए एक राजनीतिक प्रतिक्रिया के रूप में नहीं समझा जा सकता है। बल्कि, प्रतिरोध आंदोलन वैश्वीकरण प्रवृत्तियों द्वारा आकार लेते हैं और सांस्कृतिक प्रक्रियाओं का संघटन होते हैं।" 'प्रतिरोध क्या है, इसका दायरा क्या है और इसे कैसे परिभाषित किया जाना चाहिए' विषय पर विद्वानों के मतभेद सामाजिक प्रतिरोध को सैद्धांतिक रूप देने की प्रक्रिया बहुत जटिल बना देते हैं। एमडी नुरूज्जमैन (2009) के अनुसार सामाजिक प्रतिरोध न तो विशेष रूप से ''राजनीतिक कार्रवाई का एक रूप'' और न ही एक एकमुश्त ''सांस्कृतिक प्रतिक्रिया के रूप में है,'' बल्कि व्यापक राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक संदर्भ में ''अस्तित्व के लिए एक संघर्ष'' के रूप में है।

यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है, कि प्रतिरोध की राजनीतिन केवल राज्य को नवउदारवादी वैश्वीकरण के प्रति एक प्रतिकारी बल के रूप में कार्य करने के लिए वापस लाने की आवश्यकता का आह्‌वान करती है, बल्कि यह परस्पर संबद्ध विश्व अर्थव्यवस्था की चुनौतियों से निपटने के लिए उपयुक्त नये शासन संस्थानों का भी

आह्वान है। यह परिप्रेक्ष्य कार्ल पोलनी की प्रतिरोध की धारणा ''काउंटर–मूवमेंट'' से प्रेरित है। यह अवधारणा 18 वीं और 19 वीं सदी के दौरान इंग्लैंड में औद्योगिक पूँजीवाद के विघटनकारी और ध्रुवीकरण प्रभावों से निपटने के लिए समाज द्वारा लिए गए आत्म सुरक्षात्मक उपायों को संदर्भित करती है। वैश्वीकरण का प्रतिरोध सामाजिक रूप से परिभाषित कार्यों से विरूपित कर पूँजीवादी अर्थव्यवस्था की ओर प्रवाह को पलटने का संघर्ष है। यह बाजार के नियंत्रण को पुनः प्राप्त करना है। एंटोनियो ग्राम्सी ने ''काउंटर–आधिपत्य प्रतिरोध'' की धारणा पेश की, जहाँ प्रतिरोध दीन हीन समूहों, या मातहत बलों का कार्य है, जो सामाजिक व्यवस्था को बनाने और बनाए रखने के लिए सत्तारूढ़ वर्गों द्वारा असमान पूंजीवादी विकास की स्थितियों में उपयोग की जाने वाली सत्ता की रणनीति को दुर्बल करने का निर्देश देता है (कुमार चंचल और अन्य 2017 : 72)। इस नजरिए से वैश्वीकरण का प्रतिरोध लोकतांत्रिक साधनों से राज्य पर नियंत्रण पाना है जो कि राष्ट्रीय लोकप्रिय राजनीतिक परियोजना को आगे बढ़ाने और उसके बाद वैश्वीकरण को बदलने के लिए अंतरराष्ट्रीय राजनीतिक संबंधों को फिर से संगठित करने की दिशा में निर्देशित है । यह प्रतिरोध स्वीकृत और संस्थागत ज्ञान एवं विचारधारा, जो कि नव–उदारवादी वैश्वीकरण की सामान्य भावना और बाजार में उसके विश्वास को वैध करता है ,से जूझने की प्रक्रिया है । वैश्वीकरण और प्रतिरोध का एक आशाजनक सिद्धांत माइकल हार्ड्ट और एंटोनियो नेगरी के Empire (2000) और Multitude (2004) द्वारा पेश किया जाता है। हार्ड्ट और नेगरी के लिए, वैश्वीकरण एक नया साम्राज्यवादी तर्क है जो कि नेक सिद्धांतों पर आधारित युद्ध आयोजित करता है और किसी के जीवन एवं मृत्यु का निर्णय करता है । वे इसे एक जटिल प्रक्रिया के रूप में देखते हैं जिसमें वैश्विक अर्थव्यवस्था और पूँजीवादी बाजार प्रणाली के विस्तार, नई प्रौद्योगिकियों और मीडिया, शासन के विस्तारित न्यायिक और कानूनी तरीकों, और सत्ता, संप्रभुता और प्रतिरोध के आकस्मिक तरीकों के विस्तार का बहुआयामी मिश्रण शामिल है।फिर भी, राष्ट्र राज्यों के इस युग में वैश्विक शक्ति के पैमाने के रूप में, यह बहिर्गमन करता है औरइसे किसी सत्ता केंद्र विशेष या राज्य की राजधानी से नहीं जोड़ा जा सकता है। हार्ड्ट और नेगरीने आंशिक रूप से अनियोजित और वैश्विक साम्राज्य में अमेरिकी अपवाद और सैन्यीकरण की भूमिका में विफल होने के लिए आलोचना के अपने हिस्से को व्यक्त किया है। इसी तरह, थॉमस फ्रीडमैन (1999) जिसे वे ''लेक्सस'' और "जैतून का पेड़" कहते हैं के बीच एक और अधिक सौम्य अंतर बनाते हैं।'' लेक्सस "आधुनिकीकरण का, समृद्धि और विलासिता का, और पाश्चात्य खपत का प्रतीक है एवं यह"जैतून के पेड़", जो जड़ों, परंपरा, स्थान और स्थिर समुदाय का प्रतीक है, के विपरीत है। इसके विपरीत फ्रीडमैन, वैश्वीकरण की कम आलोचना करता है और वैश्वीकरण की दमनकारी विशेषताओं की गहराई एवं प्रतिरोध और विरोध के विस्तार और सीमा को समझने में विफल है। विशेष रूप से, वह पूँजीवाद और लोकतंत्र के बीच विरोधाभासों को मुखर करने में विफल रहता है, और वैश्वीकरण और उसके आर्थिक तर्क द्वारा लोकतंत्र को नजरअंदाज करने के तरीकोंके साथ–साथ इसे प्रसारित करने के तरीकों को मुखर करने में विफल है।

(Resisting Globalisation : https://pages-gseis-ucla-edu/faculty/kellner/ essays/ resistingglobal ization-pdf).

प्रतिरोध के आंदोलन लगातार उत्पन्न हो रहे हैं और बदल रहे हैं, यहां तक कि तकनीकी आविष्कार के रूप में दुनिया भर में पैदा हो रहे हैं और एक वैश्विक मीडिया

संस्कृति को जन्म दे रहे हैं जबकि आर्थिक संकट, प्राकृतिक आपदाएँ, सैन्यीकरण, और युद्ध वैश्विक स्थिति को कमजोर करने की धमकी देते हैं। इसलिए, वैश्वीकरण और प्रतिरोध के सिद्धांतों को अंततः चल रहे परिवर्तन के प्रति संवेदनशील रहना चाहिए, सख्ती से आलोचनात्मक होना चाहिए, और हठधर्मी या अत्यन्त व्याख्यात्मक होने की प्रवृत्ति पर विजय पाना चाहिए।

उपर्युक्त सैद्धांतिक योग नए समूहों और आंदोलनों, जो मोटे तौर पर वैश्विक सामाजिक न्याय या विश्व नैतिकता एजेंडा, जो मानवाधिकारों के प्रभाव और प्रभावकारिता का विस्तार करने की इच्छा में परिलक्षित होता है, के पक्ष में हैं, में से अधिकांश के वैचारिक अभिविन्यास को समझाने में मदद करते हैं। इससे अंतरराष्ट्रीय कानून प्रगाढ़ हुआ है तथा राज्यों और अंतरराष्ट्रीय संगठनों पर निगरानी और दबाव बनाने के लिएनागरिक नेटवर्क विकसित हुआ है। वैश्विक नागरिक समाज टीएनसी और अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के बीच तीसरी ताकत के रूप में उभरा है, जो कि न तो बाजार का प्रतिनिधित्व करता है और न ही राज्य का (कुमार चंचल और अन्य 2017 : 70)।

अपनी प्रगति की जांच करें अभ्यास 2

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का प्रयोग करें।

ii) इकाई के अंत में अपने उत्तर के लिए सुझाव देखें।

2. वैश्विक प्रतिरोध के सैद्धांतिक व्याख्या पर चर्चा करें?

.....

.....

.....

.....

.....

12.4 वैश्वीकरण का विरोध

वैश्वीकरण का प्रतिरोध नवउदारवादी सुधारों के विस्थापित परिणामों एवं अर्थव्यवस्था, राजनीति और पहचान/संस्कृति के क्षेत्र में इसके प्रभावों के प्रत्युत्तर में सामाजिक समूहों और व्यक्तियों के संघर्षों और कार्यों के सारे पहलू को संदर्भित करता है। (सगुइएर, मार्सेलो, 2012) प्रतिरोध के नए वैश्विक सामाजिक आंदोलनों के मूल मूल्यों में अहिंसक संघर्ष, लोकतांत्रिक प्रथा, सामाजिक न्याय, समग्रता, धर्मनिरपेक्षता, शांति, एकजुटता (स्थानीयता, संकीर्णता और संकीर्ण राष्ट्रवाद/जन्मवाद या वर्चस्व के विरोध में) और समानता (महिलाओं के खिलाफ पितृसत्तात्मक उत्पीड़न का विरोध के साथ–साथ वर्ग, जाति और जातीय आधारित भेदभाव का विरोध) शामिल हैं । महिलाओं द्वारा उच्च भागीदारी युक्त नए सामाजिक आंदोलन में विचारों और संगठनों का और ज्यादा विसरित स्वरूप दिखता है। वैश्विक सामाजिक आंदोलन घरेलू परिणाम उत्पन्न करने के लिए परदेशीय स्तर पर भी कार्य करते हैं, लेकिन वे मुख्य रूप से प्रथाओं को बदलने और विश्व राजनीति में विचारों और मानदंडों को प्रभावित करने का लक्ष्य रखते हैं। उनमें से कुछ उम्मीद करते हैं कि सूचना, अनुनय और नैतिक दबाव के उपयोग अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों और वैश्विक शासन के तंत्रों में बदलाव

में योगदान देंगे। दूसरे प्रतिस्पर्धा औचित्य को एक राजनीतिक प्रक्रिया के रूप में तैनात करते हैं और विशेष मुद्दों के आसपास अभियानों को भड़का कर सच्चे नैतिक उद्यमी बनने में संलग्न हैं। उदाहरण के लिए, भारत में "नर्मदा आंदोलन" स्थानीय, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय गैर–राज्य संगठनों के गठबंधन के रूप में नर्मदा नदी के किनारे विशाल बाँधों की स्थिति में सुधार लाने में और यहाँ तक कि बाँधों के एक सेट के निर्माण में सक्षम रहा है।

(Transnational Social Movements: http://socialsciences-scielo-org/pdf/s_ bpsr/ v2nse/ a01v2nse-pdf).

आज के नए सामाजिक आंदोलनों के प्रतिरोध को कई ऐतिहासिक उदाहरणों से जोड़ने के कई कारण हैं। इनमें प्रतिरोध के प्राचीन उदाहरणों से लेकर बढ़ते वैश्वीकरण के प्रतिरोध सम्मिलित हैं । उदाहरण स्वरूप लैटिन अमेरिकी लोकप्रिय शिक्षा कार्यक्रम और 1950 और 1960 के दशक में अफ्रीकी राष्ट्रवाद का उदय, भारत का चिपको आंदोलन, अमेजन के बारिश वन विनाश के खिलाफ चिको मेंडेस का संघीकरण, और 1980 के दशक में चीन के तियानानमेन स्क्वायर लोकतंत्र आंदोलन, 56 ''आईएमएफ दंगे'' जो कि लैटिन अमेरिका, कैरेबियन, अफ्रीका, यूरोप और मध्य पूर्व में 1985 से 1992 के बीच हुई, और प्रतिरोध की अभिव्यक्तियों जैसे नाइजीरिया में शेल ऑयल से लड़ने के लिए 1991 में ओगोनी लोगों के अस्तित्व के लिए आंदोलन का गठन, साथ ही दक्षिण अफ्रीका में स्व निर्धारित राष्ट्रीय एकता की एक सरकार का चुनाव और 1994 में चियापास, मेक्सिको में नेशनल लिबरेशन की जपाटीस्टा सेना का उद्‌भव। जबकि इनमें से कुछ प्रतिरोध आंदोलनक्षेत्रीयकृत थे और उनके दृष्टिकोण स्थानीय परंपराओं पर आधारित थे, जिसका उपयोग उन्होंने अनर्गल पूंजीवादी विकास के नकारात्मक और उपनिवेश प्रभावों से लड़ने के लिए किया था, अन्य आंदोलन जैसे जपातीस्तास ने हिंसक और अहिंसक विरोध के मिश्रण के माध्यम से पूंजीवादी वैश्वीकरण के खिलाफ हाल ही में हुए समूहिक एकजुटता से समानता का प्रदर्शन किया, ने दुनिया भर के असंख्य दीन लोगों और समूहों के साथ एकजुटता बनाने का प्रयास करते हैं, और उनके नए मीडिया (जैसे, इंटरनेट, फेसबुक) का विनाश प्रतिरोधी लक्ष्यों को आगे बढ़ाने वाले हथियारों के रूप में कार्य करते हैं। निर्विवाद रूप से, आज वैश्वीकरण के प्रतिरोध के बहुत से भाग को,सिवाय इंटरनेट से जुड़े नई प्रौद्योगिकियों के अपने उपयोग के अलावा, नहीं समझा जा सकता है ।

विशेष रूप से, 2001 के बाद से, विश्व सामाजिक मंच (WSF) को विश्व आर्थिक मंच (WEF) के वार्षिक प्रतिरोधी शिखर सम्मेलन के रूप में आयोजित किया गया जिसका सिद्धान्त ''एक दूसरी दुनिया संभव है'' था। इस समावेशी मंच में 100 से अधिक देशों से लाखों की संख्या में विभिन्न प्रकार के प्रतिभागियों ने भाग लिया। सामाजिक प्रथाओं और राजनीतिक गतिविधियों के परिपेक्ष्य में विश्व सामाजिक मंच को वैश्विक सामाजिक न्याय के आदर्शों के लिए किए गए एक व्यापक आंदोलन के अभिन्न अंग के रूप में देखा जा सकता है। WSF ने नवउदारवादी वैश्वीकरण मॉडल के संभावित विकल्पों को प्रतिबिम्बित करने के लिए एक उपयुक्त मंच प्रदान किया है। इसके अलावे इसे बैठकों, चर्चाओं और प्रस्तावों के लिए खुले क्षेत्रों के एक समूह के रूप में माना जा सकता है, जैसा कि फिशर और पोनियाह (2003 : 10) ने सुझाव दिया है ''इसे शिक्षण, नेटवर्किंग और राजनीतिक गठन की रचना करने वाले एक शैक्षणिक आधार के रूप में देखा जा सकता है।''

12.5 वैश्विक सामाजिक आंदोलन

मौलिक आधार पर परिवर्तनशील होने के कारण सामाजिक आंदोलन को स्पष्ट रूप से परिभाषित करना मुश्किल साबित हुआ है। हालांकि, सामाजिक आंदोलन का सार प्रतिरोध है। यह यथास्थिति के खिलाफ प्रतिरोध हो सकता है, जिसमें आंदोलन के सदस्य आश्रय, भूमि और सेवाओं तक पहुँच जैसे बुनियादी मानवाधिकारों की माँग करते हैं, या अपने अधिकारों के भविष्य के उल्लंघन के खिलाफ प्रतिरोध हो सकता है क्योंकि वे सरकारी पहलों जैसे बड़े पैमाने पर बाँध निर्माण, वाणिज्यिक मत्स्य पालन या स्थानीय आजीविका के लिए महत्वपूर्ण क्षेत्रों में संरक्षित पर्यावरण क्षेत्रों की स्थापना का विरोध करते हैं। Schlaepfer एवं अन्य (1994) ने सामाजिक आंदोलन को एक सामुदायिक संग्रहण के रूप में परिभाषित किया है जो स्थानीय समस्या के राजनीतिक प्रभाव को दर्शाता है। यथास्थिति के लिए सामाजिक आंदोलनों की चुनौतियां आम तौर पर अत्यधिक मुखर होती हैं, और इसके सदस्य अक्सर सरकार या अन्य बुद्धिजीवियों और उनकी नीतियों के विरोध में अपनी विचारधारा व्यक्त करते हैं। हालांकि सामाजिक आंदोलनों और राज्य के विभिन्न अंगों के बीच संबंध जटिल हैं।

आंदोलन अक्सर सरकार का विरोध करते हैं, लेकिन वे त्रुटि निवारण या अधिकार प्रदान करने के लिए समान रूप से इस पर निर्भर हैं। राज्य के साथ उनकी रणनीतिक बातचीत सामाजिक आंदोलन को राजनीतिक दायरे में लाती है। Foweraker (1995 : 69) बताते हैं कि 'सभी सामाजिक आंदोलनों को कुछ हद तक अपनी राजनीतिक परियोजनाओं या उनके संस्थागत और राजनीतिक परिवर्तन को प्रभावित करने के प्रयासों से परिभाषित किया जाना चाहिए।' राजनीति से प्रभावित सामाजिक आंदोलन अक्सर अपनी माँगों और गतिविधियों के मामले में अत्यधिक कट्टरपंथी और अभिनव होते हैं। आंदोलन के सदस्य अपने विचारों को विदित करने और अपनी माँगों को मुखर करने के लिए नए तरीकों की खोज करते हैं, और कई बार इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए कानून तोड़ सकते हैं।

सिएटल में घटित 1999 की घटनाओं के बाद से वैश्विक शहरों में वैकल्पिक वैश्वीकरण विरोध घटनाओं की एक पृथक सहज श्रृंखला नहीं है, बल्कि आर्थिक और वित्तीय वैश्वीकरण के खिलाफ एक तीव्र समन्वित और शक्तिशाली सामाजिक आंदोलन है जो अक्सर विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ), विश्व बैंक और अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) जैसे अंतरराष्ट्रीय संगठनों को निशाना बनाता है। इन विरोधों के माध्यम से, और विशेष रूप से 2001 में पोर्टो एलेग्रे में पहले विश्व सामाजिक मंच के बाद से आयोजित मंचों की श्रृंखला के माध्यम से, अंतरराष्ट्रीय नेटवर्क, गठबंधन और आंदोलन घरेलू राजनीतिक प्रणालियों और अंतरराष्ट्रीय राजनीति दोनों को बदलने का प्रयास करते हैं। वे अंतरराष्ट्रीय एजेंडे के लिए नए मुद्दों की रचना करते हैं, नए निर्वाचन क्षेत्रों को सक्रिय करते हैं, अपने हितों और अपनी पहचान की समझ को बदलते हैं, और कभी–कभार राज्य प्रथाओं को भी बदलते हैं (खाग्राम एवं अन्य 2002)।

वैश्वीकरण को भी विभिन्न स्तरों पर नीचे से चुनौती दी जाती है। व्यक्तिगण ऐसे श्रृंखलाबद्ध कार्य कर सकते हैं जो वैश्वीकरण के पहलुओं का विरोध करते हैं । उदाहरण के लिए, फ्रांस के जोस बोव द्वारा मैकडॉनल्ड्स के विस्तार का विरोध, कई लोगों द्वारा कोका कोला, स्टारबक्स जैसे वैश्विक उत्पादनों की खरीद का विरोध, या

अपने उत्पादनों को वालमार्ट में देने से इनकार क्योंकि कम कीमतों के लिए उनकी क्रूर प्रतिबद्धता अक्सर दक्षिणवासी मजदूरों के लिए कम मजदूरी का सबब बन जाती है। जमीनी स्तर पर कईछोटे, स्थानीय रूप से सक्रिय समूह भूमंडलीकरण का विरोध करते है। तालिबान, बोको हराम, आईएसआईएस आदि जैसे कई धार्मिक कट्टरपंथी हैं जो अपने धर्म के शुद्ध संस्करण की वापसी चाहते हैं, और वैश्विक प्रक्रियाओं का विरोध करते हैं जो उन्हें लगता है कि उनकी शुद्धता के लिए खतरा है ।

12.5.1 प्रतिरोध आंदोलन : सामाजिक आंदोलनों के प्रकार

विभिन्न स्तरों पर विभिन्न प्रकार के प्रतिरोध आंदोलनों ने दुनिया के लगभग सभी हिस्सों में अपनी उपस्थिति दिखाई है। इनमें से कुछ आंदोलनों का अवलोकन निम्नलिखित है।

स्थानीय आंदोलन

वैश्वीकरण स्थानीय लोगों पर विभिन्न तरीकों से प्रतिकूल प्रभाव डालता है । यह उन्हें आजीविका के स्रोत से वंचित कर सकता है या फिर उन्हें स्थानीय बाजार आदि से विस्थापित कर सकता है। केरल के पालघाट में पीने के पानी के स्रोतों के संरक्षण और संरक्षण के लिए आदिवासी–दलित नेतृत्व वाले प्लाचिमाडा आंदोलन को स्थानीय प्रतिरोध के एक अच्छे उदाहरण के रूप में देखा जा सकता है। एक और उदाहरण कोझिकोड में कोराचंड किसानों द्वारा पेप्सी कोला और कोका कोला जैसी अंतरराष्ट्रीय कंपनियों के बाजार में पैठ से राहत पाने के लिए लिया गया साहसिक और वीरतापूर्ण निर्णय है ।

राष्ट्रीय आंदोलन

विभिन्न श्रमिक संगठनों, किसान संगठनों और गैर–सरकारी संगठनों (छळवे) के नेतृत्व में संघर्ष भारत में वैश्वीकरण के लिए कुछ राष्ट्रीय स्तर के प्रतिरोध की शुरुआत कर सकता है । दुनिया के अन्य हिस्सों में भी इसी तरह के प्रयास हुए हैं। संगठित किसान आंदोलनों द्वारा भारत में खेती वाले इलाके में विशेष आर्थिक क्षेत्रों (SEZs) के हालिया प्रतिरोध को राष्ट्रीय स्तर के वैश्वीकरण विरोधी संघर्ष के मामले के रूप में उद्धृत किया जा सकता है ।

वैश्विक आंदोलन

वैश्वीकरण का प्रभावी ढंग से मुकाबला करने के लिए वैश्विक स्तर पर प्रतिरोध आंदोलन आवश्यक हैं। पहले से ही इस तरह के कई आंदोलनों का आयोजन किया जा चुका है। ऐसा ही एक प्रयास है विश्व सामाजिक मंच।

दुनिया ने सिएटल और कैनकन में डब्ल्यूटीओ की मंत्रिस्तरीय बैठकय जेनोवा में जी–8 की बैठकों और दावोस में आईएमएफ/विश्व बैंक की बैठकों, जैसे जो प्रदर्शन देखेवे सभी वैश्वीकरण के लिए वैश्विक स्तर के प्रतिरोध का खुलासा करते हैं (कुरियन : 2007) ।

अपनी प्रगति की जांच करें अभ्यास 3

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का प्रयोग करें।

ii) इकाई के अंत में अपने उत्तर के लिए सुझाव देखें।

1. वैश्विक प्रतिरोध आंदोलन के प्रकार पर चर्चा करें?

.....

.....

.....

.....

.....

12.6 सामाजिक आंदोलन और गैर सरकारी संगठन

वैश्वीकरण के संदर्भ में अक्सर कहा जाता है कि नागरिक समाज ने गैर–राज्य अभिकर्ताओं, विशेष रूप से एमनेस्टी इंटरनेशनल, ग्रीनपीस, ऑक्सफैम इंटरनेशनल और मेडिसिन सैन्स फ्रंटिएर्स जैसे गैर–सरकारी संगठनों के अंतर्राष्ट्रीय नेटवर्कों के आधार पर एक महत्वपूर्ण वैश्विक आयाम ग्रहण किया है जिनकी सदस्यता, साझा उद्देश्य और संगठनात्मक गतिविधियां राष्ट्रीय सीमाओं से परे हैं। वैश्विक नागरिक समाज ने सूचना के प्रसार, बातचीत और बहस के लिए खुले मंचों के गठन और बृहत्तर लोकतंत्र की वकालत, पारदर्शिता और सरकारी और बहुपक्षीय संस्थानों में जवाबदेही के माध्यम से शासन के एक स्रोत के रूप में कार्य किया है। इस तरह, वैश्विक नागरिक समाज या वैश्विक सार्वजनिक क्षेत्र की संस्थाएं शक्तिशाली लोगों को निजी तौर पर सत्ता का मालिक बनने से रोक सकती है (कीन, 2003)। इस विस्तारगामी अंतर्राष्ट्रीय या नागरिक समाज की परत का अक्सर लोकतंत्र को बढ़ाने और बाजार और अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं की शक्ति के लिए एक प्रतिसंतुलन प्रदान करने के रूप में स्वागत किया गया है (कुमार चंचल और अन्य 2017 : 70–71) ।

दरअसल, अंतरराष्ट्रीय गैर सरकारी संगठन (INGOs) अक्सर विविध अंतरराष्ट्रीय नेटवर्क और राष्ट्रीय वकालत अभियानों में दुनिया भर के विभिन्न अभिकर्ताओं को एक साथ में लाने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। औक्स्फेम, सेव दी चिल्ड्रेन और एक्शन ऐड जैसी बड़ी दानी संस्थाओं में इन अभियानों के लिए समर्पित विभाग हैं उदाहरण के तौर पर निष्पक्ष व्यापार विभाग, जीएम फसल विभाग और बाल वेश्यावृत्ति उन्मूलन विभाग। (सामाजिक आंदोलन और गैर सरकारी संगठन : https://pdfs-semanticscholar-org/80e8/f7dfb443e7f 09554e4bf23fd769ec20c68cd-pdf11)।

वैश्विक आर्थिक प्रशासन में गैर सरकारी संगठनों की भूमिका ,खास कर के 1999 के 'बैटल ऑफ सिएटल' के बाद, बहुत सारे विद्वानों के ध्यान का केंद्र हो गयी है। व्यापक रूप से वैश्वीकरण विरोधी आंदोलन के बाह्यरूपी संस्करण के दौरान वैश्विक आर्थिक प्रणाली का बहिष्कार करने के लिए नागरिक समूह सड़कों पर आकर इसका विरोध करने लगे क्योंकि वे इसे अपवर्जनात्मक, अनुचित, दुनिया भर में सामाजिक अव्यवस्थाएँ लाने वाला और पर्यावरण विनाशकारक मानते थे। (गिल 2000; हल्लिडे 2000; विल्किंसन 2006)। अपनी वैधता संकट को रोकने के प्रयास में डब्ल्यूटीओ ने

गैर–सरकारी संगठनों के साथ संबंध विस्तार किया। विद्वानों, डब्ल्यूटीओ अधिकारियों, गैर–सरकारी संगठनों और राष्ट्रीय प्रतिनिधियों द्वारा यह व्यापक रूप से तर्क दिया जाता है कि अधिक खुली व्यापार नीति निर्माण प्रक्रियाएं जिनमें गैर–सरकारी संगठन शामिल हैं,प्रतिनिधित्व किए गए हितों की विविधता के आधार पर, अधिक लोकतांत्रिक तरीके से वैध अंतर्राष्ट्रीय व्यापार प्रणालीकी ओर ले जाएँगे।

जाहिराना तौर परकुछ गैर सरकारी संगठन कट्टरपंथी, अभिनव और राजनीतिक रूप से जुझारू हो सकते हैं, लेकिन सामाजिक आंदोलनों और गैर सरकारी संगठनों के बीच स्पष्ट संस्थागत मतभेद भी हैं। उत्तरार्द्ध उनकी संरचना से पहचाने जा सकते हैं। इसके विपरीत, सामाजिक आंदोलन अधिक तदर्थ और प्रकृति से विकासवादी होते हैं। गैर सरकारी संगठनों में निश्चित प्राथमिकताओं का एक सेट होने की संभावना अधिक होती है, जबकि सामाजिक आंदोलन अक्सर बहुत अधिक लचीले प्रवृति वाले और प्रतिक्रियाशील हो सकते हैं, क्योंकि उनके क्रिया कलाप और लक्ष्य स्थानीय और राष्ट्रीय राजनीति की अनियमितताओं एवं वैश्विक पूंजी की अस्थिरता से ग्रसित हो सकते हैं। शायद सामाजिक आंदोलनों की परिभाषा के लिए सबसे महत्वपूर्ण सदस्यता का मुद्दा है। सामाजिक आंदोलन उनके सदस्य होते हैं। इसके विपरीत, सैद्धांतिक रूप से (और कभी–कभी व्यवहारिक तौर पर भी) गैर–सरकारी संगठनों में सिर्फ एक व्यक्ति शामिल हो सकता है। जब कि एक ही व्यक्ति से बना सामाजिक आंदोलन की कल्पना करना मुश्किल होगा । सामाजिक आंदोलन अपने सदस्यों पर अत्यधिक निर्भर होते हैं जिसके लिए उन्हें लामबंद और प्रतिबद्ध रखना आवश्यक हो जाता है।

इस तरह, गैर सरकारी संगठनों को अपनी सदस्यता की तुलना में अपने आधिकारिक और संगठनात्मक लक्ष्यों, अगर वे परिभाषित हैं, द्वारा अपने कार्यशैली की संरचना को तैयार कर सकते हैं। हालांकि गैर सरकारी संगठनों ने सामाजिक आंदोलन जैसे मुद्दों को उठाया है, आलोचकों ने उनकी विचारधारा में कट्टरपंथ की कमी को महसूस किया है। हालांकि सफलता या असफलता के बाद सभी सामाजिक आंदोलन गायब नहीं हो जाएँगे। कुछ मामलों में संगठनात्मक संस्थाएँ जिन्होनें अपनी शुरुआत सामाजिक आंदोलन के रूप में की हैं वे एक गैर सरकारी संगठन, या एक गैर सरकारी संगठन की तरह इकाई, SMO (सामाजिक आंदोलन संगठन) के रूप में उभर सकती हैं।

सरकारों और कंपनियों के साथ गैर सरकारी संगठनों को वैश्विक अर्थव्यवस्था के प्रमुख अभिकर्ताओं में से एक के रूप में देखा जाता है। एक जटिल वैश्विक अर्थव्यवस्था के निर्माण का प्रभाव वस्तुओं और सेवाओं में अंतरराष्ट्रीय व्यापार से हटकर बहुआयामी है। यह यूनियनों, वाणिज्यिक निकायों, संबंधित अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्थाओं में भाग लेने वाले व्यवसायों को वैश्वीकरण की ओर ले जाता है। किसी उद्योग की नीति बनाने के लिए अंतर्राष्ट्रीय शासन का कोई भी रूप, चाहे वह गैर–सरकारी हो या अंतरसरकारी, इसकी गतिविधियों से संबंधित गैर–सरकारी संगठनों के बीच वैश्विक संबंधों को मजबूत करने को प्रोत्साहित करेगा ।

राज्यों के मत इस संदर्भ में भिन्न हो सकते हैं कि वे नागरिक समाज समूहों और व्यक्तियों को कितनी स्वतंत्रता दें। लेकिन सत्ता व्यवस्था के वैश्विक संतुलन आम तौर पर, जहां वे मौजूद हैं, गैर सरकारी अभिकर्ताओं को अधीनस्थ से लेकर राष्ट्रीय अभिकर्ताओं के रूप में स्थान देते हैं (नाउ, हेनरी आर, 2009)। सरकार अब अपने देश की सीमाओं के पार सूचनाओं के प्रवाह को नियंत्रित नहीं कर सकती है। प्रत्येक देश से गैर सरकारी संगठनचार तरीकों से गठबंधन कर सकते हैं : अंतरराष्ट्रीय गैर

सरकारी संगठन के रूप में, वकालत नेटवर्क केरूप में, काकेशस और शासन नेटवर्क के रूप में।गैर सरकारी संगठन प्रत्यक्ष रूप से सरकारों और कंपनियों को प्रभावित कर सकते हैं, परोक्ष रूप से व्यापार और सरकार के संबंध को संयमित एवं उनके बीच मध्यस्थता कर सकते हैं या व्यापार–सरकार–गैर सरकारी संगठन नेटवर्क के साथ नोड्स के रूप में कार्य करते हैं (दोह और हिल्डी टीगेन, 2003 : 565–66)। यह अंतरराष्ट्रीय संगठन की प्रमुख निर्णय प्रक्रिया को भी प्रभावित करता है। गैर–सरकारी संगठनों और अंतर–सरकारी संगठनों (आईजीओ) का विकास और उनकी पारस्परिक बातचीत उभरते वैश्विक शासन के प्रधान क्षेत्र हैं।

अपनी प्रगति की जांच करें अभ्यास 4

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का प्रयोग करें।

ii) इकाई के अंत में अपने उत्तर के लिए सुझाव देखें।

1. सामाजिक आंदोलन में गैर–सरकारी संगठनों की क्या भूमिका है?

.....

.....

.....

.....

.....

12.7 सारांश

वास्तव में वैश्वीकरण और इसके विरोधियों ने अपनी प्रक्रियाओं और प्रभाव के स्थापन और होड़ के रूप में वैश्वीकरण की प्रक्रिया को मजबूत किया है। सैद्धांतिक और व्यावहारिक सवाल पूछे जा सकते हैं कि क्या वैश्विक प्रतिरोध के नए सामाजिक आंदोलन वैश्विक राजनीति में एक काउंटर आधिपत्य ब्लॉक के रूप में काम करने में और वैश्विक प्रणाली में महत्वपूर्ण परिवर्तन लाने में सक्षम हैं ।

उपर्युक्त चर्चा यह दर्शाती है कि वैश्विक नागरिक समाज वैश्विक समस्याओं के समाधान के लिए वैश्विक सहयोग और समन्वय जैसे रचनातंत्र प्रदान करता है। वैश्विक नागरिक समाज संगठन (या GSCOs) विभिन्न वैश्विक परस्पर विरोधी मुद्दों पर अपने विचार देते हैं, नागरिकों के बीच इन मुद्दों पर बहस को प्रोत्साहित करते हैं और वैश्विक शासन के लोकतंत्रीकरण में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। वैश्विक नागरिक समाज संगठन अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नीति निर्माण पर प्रभावी प्रभाव डालने में सफल रहे हैं । ये संगठन वैश्विक शासन के साधन हैं और राष्ट्रीय सरकारों या यहाँ तक कि अंतर्राष्ट्रीय संगठनों की तुलना में स्थानीय समस्याओं का अधिक प्रभावी समाधान प्रदान करके अंतर्राष्ट्रीय राजनीति के मानदंडों को बदल रहे हैं, और पारंपरिक सत्ता की राजनीति के एक शक्तिशाली तोड़ के रूप में कार्य कर रहे हैं। वैश्विक नागरिक समाज नागरिकों को वैश्विक मुद्दों से अधिक अवगत कराता है और वैश्वीकरण और राष्ट्र राज्यों के बीच सकारात्मक और संतुलनकारी भूमिका निभाता है। वे वैश्विक शासन की सार्वजनिक शिक्षा में भी महत्वपूर्ण योगदान देते हैं, जो नागरिकों को नियामक प्रक्रियाओं में सार्थक रूप से शामिल होने योग्य बनाता है और वैश्विकशासन

के वर्तमान और संभावित भविष्य के पाठ्यक्रमों के बारे में सार्वजनिक बहस को प्रोत्साहित कर सकता है। हालाँकि पूँजीवादी वैश्वीकरण के प्रतिरोध की इस नई लहर में असली चुनौती कार्रवाई की गति बनाए रखना ,वैश्विक एकजुटता को बनाए रखना और अधिक ठोस राजनीतिक परिणाम हासिल करना है। आंदोलन की विविधता एवं भागीदारी, समग्रता और स्वायत्तता पर उनका प्रतिरोध नए आंदोलनों को उनकी वास्तविक ताकत देता है। हालांकि, ये वही गुण हैं जो वैश्विक आंदोलनों को प्रतिरोध की नई वैश्विक राजनीति में राजनीतिक प्रतिनिधित्व और संगठन की समस्या को हल करने में चुनौती देते हैं। वैश्विक नागरिक समाज और गैर–राज्य अभिकर्ता तेजी से वैश्विक शासन का एक नया स्तंभ बन रहे हैं ।

वैश्विक नागरिक समाज के समर्थकों का तर्क है कि उन्होंने प्रभावी रूप से वैश्विक शक्ति का पुनर्विन्यास किया है, जो विश्व व्यवस्था को सभ्य बनाने की लोकतांत्रिक दृष्टि को एक प्रकार से परिवर्तित करता है। हालांकि, राज्यों को लगता है कि वे वैश्विक नागरिक समाज का प्रबंधन करने और अक्सर सह–विकल्प बनाने में सफल रहे हैं। इस आपसी जीत का एक अच्छा उदाहरण विभिन्न अंतरराष्ट्रीय गैर सरकारी संगठन हैं। अंतरराष्ट्रीय गैर सरकारी संगठन (INGOs)कई क्षेत्रों – वाणिज्यिक, पर्यावरण, मानवाधिकारों, आदि के वैश्विक मामलों में एक बडेक स्थान पर कब्जा करने के लिए आए हैं और तेजी से सरकार के साथ संबंधों को प्रभावित करते हैं। इस तरह से गैर–सरकारी संगठनों ने राज्यों को बुनियादी मानवाधिकारों, गरीबी, श्रम अधिकारों, स्वास्थ्य और पर्यावरण जैसे क्षेत्रों का सम्मान करने की दिशा में भी लाया है और वास्तव में राज्य को वैश्विक समाधान पेश करने के समीप आने को मजबूर किया जाता है।

हालांकि, राजनीतिक रूप से आवेशित सामाजिक आंदोलन राजनीतिक तख्ता पलट के पारंपरिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए एक माध्यम के रूप में अपनी शक्ति का उपयोग करते हैं और अक्सर ये राजनीतिक रूप से महत्वाकांक्षी व्यक्तियोंध्नेताओं के नेतृत्व में होते हैं। कई बार, इस तरह के आंदोलन वास्तव में वैध तरीके से निर्वाचित सरकारों को गद्दी से उतारने के लिए निर्मित या समर्थित होते हैं।

इसलिए प्रतिरोध आंदोलन एक नए सार्वजनिक क्षेत्र के वैश्विक नागरिक समाज की शुरुआत का गठन कर सकते हैं जो स्वायत्तता, लोकतंत्र, शांति, पारिस्थितिक स्थिरता और सामाजिक न्याय जैसे प्रगतिशील मूल्यों को बनाए रख सकता है । हालांकि, दीर्घकालिक सार्थक तरीके से सफल होने के लिए उन्हें जवाबदेह, पारदर्शी और व्यक्तित्व पंथ से मुक्त होना चाहिए। दूसरी ओर, राज्यों को नई ताकतों को संलग्न करने और इन आंदोलनों द्वारा नागरिकों में उत्पन्न अपेक्षाओं के साथ अपनेअनुपालन को प्रदर्शित करने में तेजी से माहिर बनना होगा ।

12.8 संदर्भ ग्रंथ

गिल्स, बैरी के., (2000) (एड), *ग्लोबलाइजेशन एण्ड दि पॉलिटिक्स ऑफ रजिस्टेंस,* न्यू यॉर्क, स्ट. मार्टिन'ज प्रैस

बुज़ान, बैरी, (2004), *फ्रॉम इंटरनेशनल टू वर्ल्ड सोसाइटी?,* कैम्ब्रिज : कैम्ब्रिज : यूनिवर्सिटी प्रैस।

केआन, जे., (2003), *ग्लोबल सिविल सोसाइटी?,* कैम्ब्रिज : कैम्ब्रिज : यूनिवर्सिटी प्रैस।

केआन, जे., (2018), 'रेसिस्टिंग ग्लोबलाइजेशन', एक्सेस ऑन नवम्बर 19, 2018 https:// pages.gseis.ucla.edu/faculty/kellner/essays/resistingglobalization.pdf

कुमार चंचल, लंगथुइयांग रियामेई एण्ड संजू गुप्ता (2017), *अण्डर्स्टैंडिंग ग्लोबल पॉलिटिक्स*, न्यू डेल्ही : के डब्ल्यू पब्लिशर्स प्रा. लि.।

काल्दोर, मैरी (2000), 'सिविलाइजिंग ग्लोबलाइजेशन : दि इम्प्लिकेशंस ऑफ दि बैटल ऑफ सैटल', *मिलेनियम : ए जर्नल ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज*, 29/4 : 105–14

चिन, क्रिस्टाइन बी.एन. एण्ड जेम्स एच. मिट्टलमैन, (2000), ''कॉन्सेप्चुअलाइजेशन रेजिस्टेंस टू ग्लोबलाइजेशन,'' इन बैरी के. गिल्स (एड.), *ग्लोबलाइजेशन एण्ड दि पॉलिटिक्स ऑफ रजिस्टेंस,* लंदन एण्ड न्यू यॉर्क : मैकमिलन प्रैस लि. एण्ड स्ट. मार्टिन'ज प्रैस आईएनसी.

मोहम्मद नुरूज़्ज़ामन, (2009), *ग्लोबलाइजेशन एण्ड रजिस्टेंस मूवमेंट्स इन दि पेरीफेरी : एन अल्टर्नेटिव थियोरेटिकल अप्रोच*, एक्सेस ऑन ऑक्टूबर 10, 2018https:// www.researchgate.net/publication/250147287_Globalization_and_Resistance_Movements_in_the_Periphery_An_Alternative_Theoretical_Approach

हार्ड्ट, एम. एण्ड ए. नेग्री (2000), *ऐम्पायर*, कैम्ब्रिज : हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रैस।

हार्ड्ट, एम. एण्ड ए. नेग्री (2004), *मल्टिट्यूड : वार एण्ड डेमोक्रेसी इन दि एज ऑफ एम्पायर*, न्यू यॉर्क : दि पेंगूईन प्रैस।

फ्रीडमैन, टी. (1999), *दि लेक्सस एण्ड दि ऑलिव ट्री*, न्यू यॉर्क : फर्रार स्ट्रॉस जिरॉक्स

सागुयेर, मार्सेलो, (2012), रजिस्टेंस टू ग्लोबलाइजेशन, एक्सेस ऑन नवम्बर 19, 2018https://www.researchgate.net/publication/269104537_Resistance_to_Globalization

खग्राम, संजीव, जेम्स रिकेर, एण्ड कैथ्रीन सिक्किंक, (2002), *''फ्रॉम सैंशियागो टू सीट्ल'' : ट्रांसनैश्नल एड्वोकेसी ग्रुप्स रिस्ट्रक्चरिंग वर्ल्ड पॉलिटिक्स*, इन रिस्ट्रक्चरिंग वर्ल्ड पॉलिटिक्स, ट्रांसनैश्नल सोशल मूवमेंट्स, नेटवर्क्स, एण्ड नॉर्म्स, ऐडिटेड एस. खग्रम, जे. रिकेर एण्ड के. सिक्किंक, मिन्निापोलिस : यूनिवर्सिटी ऑफ मिन्निएसोटा प्रैस।

कार्लोस, आर.एस. मिलानी एण्ड रूथी नादिया लानियादो (2007), *ट्रांसनैश्नल सोशल मूवमेंट्स एण्ड दि ग्लोबलाइजेशन ऐजेण्डा : ए मेथोडोलोजिकल अप्रोच बेस्ड ऑन दि ऐनालाइसिस ऑफ दि वर्ल्ड सोशल फार्यूम,* ऐक्सेस ऑन नवम्बर 19, 2018 http:// socialsciences.scielo.org/pdf/s_bpsr/v2nse/a01v2nse.pdf

फिशर, विलियम, एण्ड थॉमस पोन्निआह (2003), *अन ऑट्रे मोन्डे ऐस्ट पौस्सिबल*, पैरिस : पैरांगोन

श्लीपफेर, सी., जी. रॉड्रीगुएस वियाना एण्ड एस. मोरेट्टी (1994), 'कम्यूनिटी डेवलपमेंट एण्ड सोशल मूवमेंट्स : एन एक्सपीरियेंस ऑफ सोलिडैरिटी एण्ड सिटिजनशिप इन ब्राज़ील', *कम्यूनिटी डवलपमेंट जर्नल* 29 : 4.

फॉवेरकेर, जे. (1995), *थियोराजिंग सोशल मूवमेंट्स*, लन्दन : प्ल्यूटो प्रैस।

क्यूरिआन, वी. मैथ्यू (2007), ''अल्टर्नेटिव टू ग्लोबलाइजेशन : ए सर्च' इन *मेंन्स्ट्रीम,* वॉल्यूम–एक्सएलवी, नं.35, सैचर्डे 18 अगस्त 2007

इअर्ले, लूसी, (2004), सोशल मूवमेंट्स एण्ड एनजीओ'ज : ए प्रिलिमिनरी इन्वस्टिगेशन, एक्सेस ऑन अक्तूबर 16, 2018
https://pdfs.semanticscholar.org/80e8/f7dfb443e7f09554e4b
f23fd769ec20c68cd.pdf11

गिल, स्टीफन (2000), टूवर्ड ए पोस्टमॉर्डर्न प्रिंस? दि बैटल ऑफ सीटल ऐज ए मोमेंट इन दि न्यू पॉलिटिक्स ऑफ ग्लोबलाइजेशन, *मिलेनियम : जर्नल ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज,* 29.1 : 131–140

हैलीडे, फ्रेड (2000), गेटिंग रियल अबाउट सीएटल, *मिलेनियम : जर्नल ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज,* 29.1: 123-129.

विल्किंसन, रॉरडेन (2006), दि डब्ल्यूटीओ : क्राइसिस एण्ड दि गवनेंस ऑफ ग्लोबल ट्रेड, ऐबिंगडन, यू.के. : रूटलेज

नाउ, हेनरी आर., (2009), *पर्सपेक्टिव ऑन इंटरनेशनल रिलेशंस,* वाशिंगटन डीसी : सीक्यू प्रैस।

दोह, जोनाथन पी., एण्ड हिल्डी टीगेन (2003), ''ग्लोबलाइजेशन एण्ड एनजीओ'ज : ट्रांसफोर्मिंग बिजनेस, गवर्नमेंट एण्ड सोसाइटी'', *जर्नल ऑफ इंटरनेशनल बिजनेस स्टडीज, पृ.565–66*

मिश्रा, विवेक कुमार, (2012), दिरोल ऑफ ग्लोबल सिविल सोसाइटी इन ग्लोबल गवर्नेंस, एक्सेस आफन नवम्बर 19, 2018
http://gjestenv.com/Current_Issue/vol_1/Gjest_1202.pdf

12.9 अपनी प्रगति की जांच करें अभ्यासों के उत्तर

अपनी प्रगति की जाँच करें अभ्यास 1

आपके उत्तर में वैश्वीकरण की परिभाषाएँ और वैश्वीकरण विरोधी आंदोलनों के साथ इसके संबंध शामिल होना चाहिए ।

अपनी प्रगति की जाँच करें अभ्यास 2

उत्तर में मिचेल हार्ड और एंटोनियो नेगरी सिद्धांत और वैश्विक प्रतिरोध के थॉमस फ्रीडमैन के स्पष्टीकरण पर प्रकाश डालें ।

अपनी प्रगति की जाँच करें अभ्यास 3

आपके उत्तरमें स्थानीय, राष्ट्रीय और वैश्विक सामाजिक आंदोलनों पर प्रकाश डाला जाना चाहिए।

अपनी प्रगति की जाँच करें अभ्यास 4

गैर सरकारी संगठनों कीवकालत के रूप में, लोगों और उसके शासन को जोड़नेवाले संस्थान के रूप में और वैश्विक शासन के एक उभरते केंद्रीय क्षेत्रके रूप में महत्वपूर्ण भूमिका को प्रकाशित करें।

इकाई 13 वैश्वीकरण पर वैकल्पिक दृष्टिकोण

संरचना

13.0 उद्देश्य

13.1 प्रस्तावना

13.2 वैश्वीकरण की समझ

13.2.1 वैश्वीकरण के चरण

13.3 वैश्वीकरणके सैद्धांतिक विवरण

13.3.1 वैश्वीकरणका वास्तविक विवरण

13.3.2 वैश्वीकरणका उदारवादी विवरण

13.3.3 वैश्वीकरणका मार्क्सवादी विवरण

13.3.4 विश्ववादियों के प्रकार

13.4 वैश्वीकरण का आकलन

13.4.1 वैश्वीकरण के प्रतिकूल प्रभाव

13.4.1.1 आर्थिक प्रभाव

13.4.1.2 राजनीतिक प्रभाव

13.4.1.3 सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रभाव

13.4.1.4 पर्यावरण असंतुलन

13.5 वैश्वीकरण के विकल्प

13.5.1 सैद्धांतिक दृष्टिकोण

13.5.2 व्यावहारिक विकल्प

13.6 सारांश

13.7 संदर्भ ग्रंथ

13.8 अपनी प्रगति की जांच करें अभ्यासों के उत्तर

13.0 उद्देश्य

यह इकाई वैश्वीकरण, इसके नकारात्मक और सकारात्मक प्रभावों और वैश्वीकरण के विकल्पों पर ध्यान केंद्रित करती है। इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आपनिम्नलिखित में सक्षम हो जाएंगेः

- वैश्वीकरण को परिभाषित करना;
- वैश्वीकरण के विभिन्न सैद्धांतिक पहलुओं पर चर्चा करना; तथा
- वैश्वीकरण के प्रभावों और इसके विकल्पों की आवश्यकता।

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

13.1 प्रस्तावना

वैश्वीकरण की अवधारणा कोई नई बात नहीं है। यह लंबे समय से अस्तित्व में है। हालांकि, वर्तमान सहस्राब्दी के मोड़ से यह अधिक सर्वव्यापी हो गया है और लगभग हर चीज पर लागू होता है। 1990 के दशक में प्रिंट मीडिया में इस शब्द की शुरुआत के साथ इसे लोकप्रियता मिली। जैन स्कॉल्ट (2000) के अनुसार यह पहली बार द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान सामाजिक विज्ञानों में कार्यरत था, लेकिन ध्यान दें कि इसका उपयोग 1960 और 1970 के दशक में तेजी से किया गया था और 1990 के दशक तक न केवल सामाजिक विज्ञान में, बल्कि हर रोज प्रवचन में भी व्यापक हो गया। । इस अवधारणा का सामाजिक विज्ञान सूत्रीकरण और लोकप्रियकरण सिद्धांतकारों के लिए बहुत अधिक है, जिन्होंने 1960 और 70 के दशक में संरक्षणवादी (समाजवादी) अर्थव्यवस्थाओं के कारण आर्थिक स्थिरता और उच्च मुद्रास्फीति का अध्ययन किया थाय और विश्व और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के वैश्वीकरण के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्हें नव–मार्क्सवादी निर्भरता सिद्धांतवादी भी कहा जाता है। कुछ शास्त्रीय नव–मार्क्सवादी निर्भरता सिद्धांतकारों को याद रखना महत्वपूर्ण है जब निर्भरता सिद्धांत पर चर्चा करते हुए पॉल ए. बारन और आंद्रे गौंडर फ्रैंक थे जिन्होंने घरेलू विकास के प्रयासों में अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक और शक्ति संबंधों की जांच की थी। वैश्विक आर्थिक आदान–प्रदान पर उनका ध्यान एक व्यापक परिप्रेक्ष्य को अपनाने का मार्ग प्रशस्त करता है जिसे बाद में इमैनुएल वालरस्टीन (1980) ने अपने 'विश्व प्रणालियों के सिद्धांत' में संवर्धित किया। 15 वीं शताब्दी में यूरोपीय व्यापारिक विस्तार के साथ शुरू हुई एक ऐतिहासिक प्रक्रिया के परिणामस्वरूप समकालीन अंतरराष्ट्रीय आर्थिक आदान–प्रदान की अवधारणा और 20 वीं शताब्दी तक एक एकात्मक, एकीकृत विश्व पूंजीवादी प्रणाली का निर्माण करके, वालरस्टीन ने एक वैश्विक अपनाने का मार्ग प्रशस्त किया सामाजिक विज्ञान विश्लेषण में परिप्रेक्ष्य।

संचार और मीडिया अध्ययन में समाजशास्त्रियों और विद्वानों ने यह भी माना कि तकनीकी नवाचारों ने आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक आदान–प्रदान के लिए दुनिया भर में जानकारी के प्रवाह में तेजी से वृद्धि की है। मार्शल मैकलुहान (1962) ने संचार माध्यमों में नवाचारों को ''वैश्विक गाँव'' बनाया। यह संभावना थी कि वैश्विक गांव में रहने वाले लोग अंततः एक सामान्य, वैश्विक विश्व–दृष्टिकोण साझा करेंगे जो पहचानों को फिर से खोल देगा। यह भी संभावना थी कि एक नया, महानगरीय, वैश्विक नागरिक, सभी मानव जाति की एकता की वैश्विक चेतना के साथ अंततः उभरेगा (रॉबर्टसन, 1992)।

वैश्वीकरण की आधुनिक अवधारणा की लोकप्रियता मुख्य रूप से विकसित (पूंजीवादी) देशों की आर्थिक और सामाजिक उपलब्धियों के कारण थी, जो विश्व बाजार के लिए अपनी शर्तों को निर्धारित करते थे। वैश्वीकरण के इस बढ़े हुए युग के दौरान, सामान्य रूप से दुनिया और विशेष रूप से तीसरी दुनिया में, हालांकि, बहुआयामी सामाजिक और पर्यावरणीय खतरों को भी देखा, जोवैश्वीकरण के विकल्प '(कुरियन, 2007) को दर्शाता है। विद्वानों ने वैश्वीकरण के प्रभावों का अध्ययन किया चाहे वह नकारात्मक हो या सकारात्मक। कई लोगों ने आर्थिक वैश्वीकरण के नकारात्मक प्रभावों पर जोर दिया है और अधिकांश इस तर्क से सहमत हैं (और मानते हैं) कि वैश्वीकरण का मानव कल्याण और सामाजिक न्याय के लिए विनाशकारी परिणाम हैं। उन्होंने विभिन्न देशों विशेष रूप से तीसरी दुनिया के देशों में रोजगार और मजदूरी पर वैश्वीकरण के

नकारात्मक प्रभावों को उजागर किया है, असमानताओं की ऊँचाई, लिंग और जातीय उत्पीड़न में वृद्धि और अप्रवासियों के खिलाफ भेदभाव, सामाजिक व्यय और कार्यक्रमों में छंटनी, सरकारों और उनके बारे में जानकारी घरेलू अर्थव्यवस्था की रक्षा करने में असमर्थता, प्रबंधकीयता का प्रसार और सामाजिक नीति में एक नया वर्कफेयर एथिक जो पहले के सामूहिक समाज कल्याण के आदर्शों (मिडगली, 2007) की सार्वभौमिकता को निरस्त करता है।

13.2 वैश्वीकरण की समझ

वैश्वीकरण शब्द का उपयोग कई तरीकों से किया जाता है, उदाहरण के लिए घटना का एक सेट का वर्णन करने के लिए – दुनिया भर में धन का हस्तांतरण, सूचना प्रौद्योगिकी का विकास, अंतर्राष्ट्रीय उत्पादन, पर्यटन में वृद्धि और राष्ट्र–राज्यों की गिरावट। यह एक प्रवचन के रूप में भी प्रयोग किया जाता है जिसमें वैश्वीकरण की स्वीकृति अपरिहार्य, अपरिवर्तनीय और अपरिवर्तनीय होने के रूप में सामने रखी गई है। जैसे कि वैश्वीकरण मानव एजेंसी के नियंत्रण के बाहर एक प्रकार की प्राकृतिक प्रक्रिया बन जाता है। एंथनी गिडेंस (1990) ने वैश्वीकरण को ''दुनिया भर के सामाजिक संबंधों का गहनता'' के रूप में वर्णित किया है जो दूर के इलाकों को इस तरह से जोड़ता है कि स्थानीय घटनाओं को कई मील दूर और इसके विपरीत होने वाली घटनाओं द्वारा आकार दिया जाता है। जैन आर्ट स्कॉल्ट (2005) के अनुसार, ''वैश्वीकरण उन विकासों का एक समूह है जो दुनिया को दुनिया के मामलों में दूरी और राष्ट्रीय पहचान के महत्व का अर्थ बदलने वाली एकल जगह बनाता है''। डेविड हेल्ड और एंथोनी मैकग्रे (2002) ने वैश्वीकरण को बढ़ती दुनिया के अंतर्संबंध के रूप में परिभाषित किया है, यह विस्तार के पैमाने, बढ़ते परिमाण, तेजी और अंतर–क्षेत्रीय प्रवाह और सामाजिक संपर्क के पैटर्न के प्रभाव को गहरा करता है। यह मानव सामाजिक संगठन के पैमाने में बदलाव या परिवर्तन को संदर्भित करता है जो दूर के समुदायों को जोड़ता है और दुनिया के प्रमुख क्षेत्रों और महाद्वीपों में शक्ति संबंधों की पहुंच का विस्तार करता है। वैश्वीकरण को दुनिया के संपीड़न और पूरे विश्व में चेतना की गहनता के रूप में भी परिभाषित किया गया है (रॉबर्टसन, 1992)।

परिभाषाओं का यह छोटा सा नमूना यह महसूस करने के लिए पर्याप्त है कि वैश्वीकरण कई प्रभावों के साथ एक जटिल घटना है जो एक ही परिभाषा में अपने सभी पहलुओं को कवर करना मुश्किल बनाता है। वास्तव में, इसके पास आने के तीन संभावित तरीके हैं। सबसे पहले, इसे आधुनिक परिवहन और संचार साधनों द्वारा सुलभ वस्तुओं और उत्पादन कारकों के वैश्विक प्रवाह के तेज के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। वैश्वीकरण को समय और स्थान के एक संपीड़न के रूप में भी देखा जा सकता है कि दुनिया के एक हिस्से में घटनाओं का दूर के स्थानों पर तात्कालिक प्रभाव पड़ता है। तीसरा दृष्टिकोण वैश्वीकरण को भौतिक शक्ति की ऐतिहासिक संरचना के रूप में समझना है। वैश्वीकरण अर्थव्यवस्था, राजनीति और संस्कृति में ऐतिहासिक परिवर्तन का प्रतिनिधित्व करता है (मित्तलमैन, 2006)। इसलिए, वैश्वीकरण एक महत्वपूर्ण बदलाव को दर्शाता है और इसे एक बहु–आयामी घटना के रूप में देखा जाना चाहिए, जिसमें भौगोलिक तराजू के एक दायरे में सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक संस्थानों की पूरी विविधता के बीच अत्यधिक जटिल बातचीत शामिल है।

13.3 वैश्वीकरण के चरण

थॉमस फ्राइडमैन (2005) ने वैश्वीकरण के तीन चरण की विशेषता बताई है। पहला चरण 1492 से 1800 तक है, जो व्यापारीवाद और उपनिवेशवाद की उम्र थी। दूसरा चरण 1800 से मध्य बीसवीं शताब्दी तक द्वितीय विश्व युद्ध के अंत तक था। यह अवधि पैक्स–ब्रिटानिका की उम्र में हावी थी – दुनिया भर में उपनिवेशीकरण के एक नए रूप से निर्मित। अंत में, 20 वीं शताब्दी के उत्तरार्ध के दौरान दुनिया अपने आकार से छोटे और चापलूसी वाले खेल के मैदान से सिकुड़ने लगी, जहां संयुक्त राज्य अमेरिका ने वैश्वीकरण महाद्वीपों के एक नए मॉडल (कुमार, रिमी और गुप्ता, 2017) को फिर से मजबूत और लोकप्रिय बनाया। 1945 में संयुक्त राष्ट्र संगठन की स्थापना और अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ), विश्व बैंक, टैरिफ और व्यापार (जीएटीटी) पर सामान्य समझौते और अन्य अंतरराष्ट्रीय संगठनों की तरह आर्थिक और राजनीतिक क्षेत्रों पर समझौते ने नए युग के लिए जमीन प्रदान की है वैश्वीकरण का। इसके अलावा, जलवायु परिवर्तन, क्रॉस–बाउंड्री वाटर इश्यू, वायु प्रदूषण और महासागरों में मछली पकड़ने के अधिक दोहन जैसी पर्यावरणीय चुनौतियाँ वैश्वीकरण से जुड़ी हुई हैं। वैश्वीकरण की प्रक्रियाएं व्यवसाय और कार्य संगठन, अर्थशास्त्र, सामाजिक–सांस्कृतिक संसाधनों और प्राकृतिक वातावरण से प्रभावित होती हैं।

अपनी प्रगति की जांच करें अभ्यास।

नोटः i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का उपयोग करें।

ii) अपने उत्तर के लिए सुझावों के लिए इकाई के अंत में देखें।

1. वैश्वीकरण के अर्थ और उसके आयामों का संक्षिप्त पर्णन करें।

.....

.....

.....

.....

.....

13.4 वैश्वीकरण के सैद्धांतिक विवरण

भूमंडलीकरण पर तीन सैद्धांतिक दृष्टिकोणों पर यथार्थवादी, उदारवादी और मार्क्सवादी विचारों के तहत विद्वानों द्वारा बहस की जाती है।

13.3.1 वैश्वीकरण का वास्तविक विवरण

रियलिस्टों के लिए, विश्व मंच पर मुख्य कलाकार संप्रभु राज्य हैं। वैश्वीकरण के यथार्थवादी स्पष्टीकरण शक्ति के सापेक्ष वितरण पर जोर देते हैं। यथार्थवादी के लिए, वैश्वीकरण वर्चस्व के लिए महान शक्तियों के संघर्ष का प्रतिबिंब है। नतीजतन, वैश्वीकरण, आधिपत्य के लिए संघर्ष का एक और संदर्भ है। यथार्थवादी दो मूल मान्यताओं पर भरोसा करते हैं जो वैश्वीकरण पर उनके दृष्टिकोण को आकार देते हैं। पहला, वे राज्य को अंतरराष्ट्रीय राजनीति के केंद्र में रखते हैं। दूसरे, वे 'उच्च

राजनीति' को 'कम राजनीति' से अधिक प्राथमिकता देते हैं, यानी अंतर–राज्यीय संवादों में सामाजिक और पर्यावरणीय मुद्दों पर राजनीतिक और सैन्य मुद्दों का प्रसार। इस प्रकार, वैश्वीकरण को मुख्य रूप से एक प्रक्रिया के रूप में देखा जाता है जो अंतर–राज्य संबंधों के संदर्भ को बदल देता है। प्रभाव राजनीतिक स्तर पर देखे जाते हैं भले ही परिवर्तनों की प्रकृति मुख्यतः आर्थिक हो (कुमार, रिमी और गुप्ता, 2017)। यथार्थवादी का तर्क है कि वैश्वीकरण एक महत्वपूर्ण कारक है क्योंकि विश्व उत्पादन की बदलती संरचना ने दुनिया की राजनीतिक अर्थव्यवस्था से अलग होने के लिए अवसर लागत में काफी वृद्धि की है।

13.3.2 वैश्वीकरण का उदारवादी विवरण

उदारवादियों के लिए, वैश्वीकरण को विश्व राजनीति के लंबे समय से चल रहे परिवर्तन के अंतिम उत्पाद के रूप में देखा जाता है। उदारवादियों को विशेष रूप से प्रौद्योगिकी और संचार में वैश्वीकरण द्वारा प्रतिनिधित्व क्रांति में रुचि है। इसने आर्थिक और तकनीकी रूप से आगे बढ़ने वाले समाजों के बीच परस्पर जुड़ाव को बढ़ा दिया, जिसके परिणामस्वरूप विश्व राजनीतिक संबंधों का एक बहुत ही अलग स्वरूप सामने आया। उदारवादियों का मानना है कि वैश्वीकरण सामाजिक और राजनीतिक लाभ लाता है। दुनिया भर में सूचना और विचारों का मुक्त प्रवाह व्यक्तिगत विकास के अवसरों को बढ़ाता है और अधिक गतिशीलता और जोरदार समाज बनाता है। उदारवादियों के लिए, वैश्वीकरण राष्ट्र राज्यों के अंत को चिह्नित करता है जो अन्यथा प्रमुख वैश्विक अभिनेता हैं। राज्यों के पास अब सील की गई इकाइयाँ नहीं हैं और इसके परिणामस्वरूप दुनिया संबंधों के सिलसिले के समान है। उदारवादियों का यह भी तर्क है कि वैश्वीकरण अनिवार्य रूप से वैश्विक राजनीतिक पहचान के प्रसार और फिर वैश्विक नागरिक समाज (कुमार, रीमेई और गुप्ता 2017) का निर्माण करेगा।

13.3.3 वैश्वीकरण का मार्क्सवादी विवरण

मार्क्सवादी वैश्वीकरण के सार को वैश्विक पूंजीवादी व्यवस्था की स्थापना के रूप में चित्रित करते हैं। मार्क्सवादी के लिए, वैश्वीकरण वैश्विक अर्थव्यवस्था में 'कोर', 'सेमी पेरीफेरल' और 'परिधि' क्षेत्रों के बीच संरचनात्मक असंतुलन के संदर्भ में इम्मानुएल वालरस्टीन जैसे विश्व प्रणाली सिद्धांतकार द्वारा समझाया गया, अमीर और गरीबों के बीच एक असमान, श्रेणीबद्ध आदेश है। । उनके लिए वैश्वीकरण मौजूदा विश्व व्यवस्था को गहरा करता है, कॉर्पोरेट शक्ति की बढ़ती गतिविधियों के कारण लोकतांत्रिक जवाबदेही और लोकप्रिय जवाबदेही को कमजोर करता है। नव–मार्क्सवादी वैश्विक पूंजीवादी व्यवस्था में असमानताओं को उजागर करते हैं, जिसके माध्यम से विकसित देश संचालित होते हैं या कभी–कभी ट्रांसनेशनल कॉरपोरेशन (टीएनसी) के माध्यम से संचालित होते हैं या संयुक्त राज्य अमेरिका जैसी विषम शक्तियों से जुड़े होते हैं, जो विकासशील देशों पर हावी होते हैं और उनका शोषण करते हैं (कुमार, रिमी और गुप्ता 2017) । सूचना प्रौद्योगिकी में क्रांति ने वैश्वीकरण के आर्थिक और राजनीतिक अर्थ को बदल दिया है। इससे राष्ट्र राज्यों के बीच और राष्ट्र के भीतर ही असंतुलन आ गया है।

अपनी प्रगति की जांच करें अभ्यास 2

नोटः i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का उपयोग करें।

ii) अपने उत्तर के लिए सुझावों के लिए इकाई के अंत में देखें।

1. वैश्वीकरण के सैद्धांतिक दृष्टिकोण की चर्चा करें।

.....

.....

.....

.....

.....

13.3.4 विश्ववादियों के प्रकार

वहाँ तीन प्रकार पाए जाते हैंः हाइपरग्लोबलिस्ट, ट्रांसफॉर्मलिस्ट्स और संशयवादियों के रूप में डेविड हेल्ड और एंथोनी मैकग्रा (2007) द्वारा पहचाना गया। इस प्रकार के प्रत्येक का लक्ष्य विभिन्न दृष्टिकोणों से वैश्वीकरण की विशिष्ट विशेषताओं की विशेषता है।

अतिविश्ववादी

अतिविश्ववादी, जैसे के. ओहमा, और आर. रीच (ओहमा, 1995) का मानना है कि ''वैश्विक अर्थव्यवस्था का मानवता और राजनीति पर महत्वपूर्ण प्रभाव है; उनका तर्क है कि बाजार सीमा रहित है और अर्थव्यवस्था एकल, वैश्विक और एकीकृत है। कोई राष्ट्रीय उत्पाद या तकनीक नहीं होगी, कोई निगम नहीं होगा, कोई राष्ट्रीय उद्योग नहीं होगा। अब राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था नहीं होगी'' (रॉबर्ट रीच, 1992)। वैश्वीकरण के आर्थिक आयाम पर अतिविश्ववादियों का ध्यान दोनों, नवउदारवादी और मार्क्सवादी सिद्धांतकारों को शामिल करता है। अतिविश्ववादियों का तर्क है कि आर्थिक वैश्वीकरण उत्पादन, व्यापार और वित्त, एक सीमाहीन अर्थव्यवस्था के अंतरराष्ट्रीय नेटवर्क की स्थापना के माध्यम से अर्थव्यवस्थाओं का अराष्ट्रीयकरण कर रहा है जिसमें वैश्विक पूंजी से ट्रांसमिशन बेल्ट की तुलना में राष्ट्रीय सरकारों को थोड़ा अधिक आरोपित किया जाता है। विशिष्ट स्थानीय संस्कृतियों और पारंपरिक मूल्यों के बजाय, वैश्वीकरण एक वैश्वीकृत समृद्ध, उच्च शिक्षित और ऊर्ध्वगामी मोबाइल क्षेत्र को बढ़ावा देता है, जो कि व्यक्तिवाद, उपभोक्तावाद, धर्मनिरपेक्षता और नव–उदारवादी पूंजीवाद पर एक प्रीमियम रखता है। अतिविश्ववादी भी कहते हैं कि एकल वैश्विक बाजार की वृद्धि और राज्यों के लिए अपनी आर्थिक नियति निर्धारित करने की क्षमता में कमी वैश्विक समकालीनकरण (कुमार, रिमी और गुप्ता 2017) की विशेषता वाले सबसे महत्वपूर्ण कारक हैं। हाइपरग्लोबेलिस्ट एक प्रक्रिया के रूप में वैश्वीकरण की कल्पना करते हैं, जिसका आंतरिक तर्क और अनुमानित परिणाम है, वैश्विक समाज पूरी तरह से एकीकृत बाजार पर आधारित है। दूसरे शब्दों में, सभी प्रकार की विषम संस्कृतियां, विशिष्ट रूप से उदार सांस्कृतिक ढांचे से प्राप्त बाजारों और संस्थानों के आधार पर, अद्वितीय सामाजिक पैटर्न के सामने वापस आती हैं। इस अर्थ में, ''इतिहास के अंत'' के बारे में एक प्रसिद्ध धारणा उत्पन्न होती है, जिसका तात्पर्य यह है कि राजनीतिक

ढांचे के रूप में उदार लोकतंत्र के साथ आधुनिक, वैश्विक पूंजीवाद सामाजिक–आर्थिक विकास के अंतिम शब्द (स्टेफेनोविक, 2008) का प्रतिनिधित्व करता है)। संक्षेप में, अतिविश्ववादी वैश्वीकरण को विश्व अर्थव्यवस्था के एकीकरण की एक अनोखी, वैध और प्रगतिशील प्रक्रिया के रूप में प्रस्तुत करता है।

संशयवादी

पी. हर्स्टऔर जी. थॉम्प्सनजैसे संशयवादियों का सुझाव है कि ''वैश्वीकरण काफी हद तक एक मिथक है''। उनका मानना है कि मौजूदा वैश्वीकरण की सीमा अतिरंजित है और वैश्विक व्यापार की वृद्धि केवल प्रमुख विकसित अर्थव्यवस्थाओं – यूरोप, एशिया–प्रशांत और उत्तरी अमेरिका में हुई है। "अंतर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था वह है जिसमें राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाओं के स्तर पर निर्धारित प्रक्रियाएँ अभी भी हावी हैं और अंतर्राष्ट्रीय घटनाएं ऐसे परिणाम हैं जो राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाओं के विशिष्ट और विभेदक प्रदर्शन से निकलती हैं। ''अंतर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था राष्ट्रीय रूप से स्थित कार्यों का एक समुच्चय है'' (हर्स्ट एंड थॉम्पसन, 1999)। संशयवादियों का तर्क है कि समकालीन वैश्वीकरण न तो नया है और न ही क्रांतिकारी। वे केवल वैश्वीकरण के आर्थिक आयाम पर ध्यान केंद्रित करते हैं, यह तर्क देते हुए कि यह अंतरराज्यीय व्यापार के उच्च स्तर और यूरोपीय संघ (ईयू), और उत्तरी अमेरिकी मुक्त व्यापार समझौते (नाफ्टा) जैसे क्षेत्रीय आम बाजारों के विस्तार की सुविधा है जो वैश्विक आर्थिक एकीकरण को कम करते हैं । उनके विचार में, राज्य इन गतिविधियों में एक प्रमुख भूमिका बनाए रखते हैं, जिसमें वैश्विक आर्थिक प्रक्रियाओं को विनियमित करने और यहां तक कि अप्रकाशित करने की क्षमता भी शामिल है। सभी सरकारें वैश्विक अर्थव्यवस्था को विनियमित करने के लिए औपचारिक अधिकार बरकरार रखेंगी। संशयवादियों ने संदेह व्यक्त किया है, दोनों वैश्वीकरण के प्रभावों और इसकी सर्वव्यापकता के साथ–साथ एकीकरण प्रभाव की स्थिरता के संदर्भ में, जो इसे पैदा करता है(कुमार, रिमी और गुप्ता 2017)।

परिवर्तनकारी

तीसरे समूह को हेल्ड और मैकग्रे द्वारा परिवर्तनकारी के रूप में परिभाषित किया गया है, जिसमें रोसेनौ या गिडेंस जैसे लेखक शामिल हैं। वे मानते हैं कि भूमंडलीकरण तेजी से आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक परिवर्तनों में एक आवश्यक भूमिका निभाता है जो आजकल विश्व व्यवस्था और आधुनिक समाजों का पुनर्गठन कर रहे हैं। ''वैश्वीकरण ने दुनिया भर के सामाजिक संबंधों और बातचीत के गहनता को दर्शाता है, जैसे कि दूर की घटनाओं को बहुत स्थानीयकृत प्रभाव प्राप्त होता है और इसके विपरीत'' (हेल्ड, मैकग्रे, 2007)। ''वैश्वीकरण स्थानीय, और यहां तक कि व्यक्तिगत, सामाजिक अनुभव के संदर्भों के परिवर्तन की चिंता करता है। हमारी दिन–प्रतिदिन की गतिविधियाँ दुनिया के दूसरी ओर होने वाली घटनाओं से प्रभावित होती हैं। इसके विपरीत, स्थानीय जीवनशैली की आदतें विश्व स्तर पर परिणामी हो गई हैं''।

परिवर्तनवादी (गिडेंस, शोल्टे, कैस्टेल, वालरस्टीन) वैश्वीकरण प्रक्रिया की सर्वव्यापकता और रैखिकता पर जोर देने के साथ–साथ इसके प्रभावों की प्रगतिवाद का आकलन करने के मामले में अधिक उदारवादी हैं। लेकिन वे वैश्वीकरण के बारे में संदेह के सिद्धांत को स्वीकार नहीं करते हैं। उनके लिए, समाज के संगठन में निर्विवाद रूप से मूलभूत परिवर्तन जो कि वैश्वीकरण लाता है, अंतरिक्ष और समय के ''संपीड़न'' के

माध्यम से सामाजिक आर्थिक गतिशीलता के बढ़ते समग्र एकीकरण और त्वरण हैं। हालांकि, उनका दृष्टिकोण बहुआयामी है, जो आर्थिक लोगों के अलावा वैश्वीकरण के तंत्र को ध्यान में रखते हैं। इस अर्थ में, आधुनिकतावाद के एक समाजशास्त्री, एंथोनी गिडेंस (1990), ''आधुनिक'' पूंजीवादः राजनीति, सैन्य शक्ति और उद्योगवाद के बलों द्वारा आकार की एक घटना के रूप में वैश्वीकरण को मानते हैं। ये बल वैश्वीकरण के आयामों के स्रोत हैं।

परिवर्तनकारी के लिए, अंतर्राष्ट्रीय, उप–राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय समूह और संगठन राज्य प्राधिकरण और पावर वेन के रूप में अधिक महत्वपूर्ण हैं। और राज्यों की घटती क्षमता और क्षेत्र के कम महत्व के साथ, धर्म और जातीयता जैसे पहचान आधारित सुविधाओं की भूमिका वैश्विक राजनीति में बढ़ी और फैली है। संक्षेप में, परिवर्तनकारी परिणाम की दृष्टि से वैश्वीकरण की प्रक्रिया को असमान और अनिश्चित मानते हैं, जिससे इसकी बहुपरंपरा पर जोर पड़ता है।

13.4 वैश्वीकरण का आकलन

वैश्वीकरण को 1980 के दशक में आधुनिक दुनिया की सभी सामाजिक–आर्थिक बीमारियों के लिए रामबाण माना गया। इसके प्रचार के पीछे ट्रांसनैशनल कॉर्पोरेशन (टीएनसी) मुख्य बल थे। उन्होंने नव–उदारवादी शिक्षा के माध्यम से, तीसरी दुनिया को बताया कि 'आर्थिक विकास' का इंजन उदार वैश्विक बाजार में रहता है और परिणामी परिणाम गरीबी और असमानता (कुरियन) के लिए ऐसी सामाजिक–आर्थिक समस्याओं के समाधान के लिए एक सक्षम वातावरण उत्पन्न करेगा। 2007)। उदारीकरण सफल भूमंडलीकरण के लिए एक उपकरण था, जो दो रूपों में दिखाई दिया। सबसे पहले, गैटशेड्यूल के अनुसार टैरिफ का उन्मूलन/कमी, स्वच्छता और फाइटो–सेनेटरी (एसपीएस) के माध्यम से गैर–टैरिफ अवरोधों का उन्मूलन/युक्तिकरण और डब्ल्यूटीओ के लिए व्यापार (टीबीटी) समझौतों के लिए तकनीकी बाधा, आयात और निर्यात प्रक्रियाओं का सरलीकरण। कई अंतरराष्ट्रीय समझौते। दूसरे शब्दों में, वैश्विक बाजार में पहुंच और संचालन पर प्रतिबंधों की कमी थी। दूसरे, विदेशी आर्थिक संबंधों से संबंधित घरेलू कानून में बदलाव किया गया, जैसे कि आयात और निर्यात के लिए कोटा खत्म करना, घरेलू बाजार में विदेशी पूंजी पर प्रतिबंध को हटाना। परिणामस्वरूप, विकासशील देशों में श्रम–गहन, पर्यावरण–प्रदूषित उद्योगों को स्थानांतरित किया जाने लगा। इसके अलावा, वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति ने स्थानिक पृथक्करण प्रक्रिया (जैसे कि पूंजी–गहन और ऊर्जा गहन प्रक्रियाएं) और उत्पादन के कारकों के मूल्यों के अनुसार व्यक्तिगत चरणों की नियुक्ति के अवसर पैदा किए। उसी समय, बेहतर परिवहन और संचार ने इन बिखरी हुई प्रस्तुतियों को अपेक्षाकृत मामूली लागत (ओ'रॉकरे, विलियम्सन, 1999) में सहभागिता की अनुमति दी। उपर्युक्त सभी कारकों के परिणामस्वरूप, उत्पादन को आज वास्तव में वैश्विक चरित्र प्राप्त हुआ। हम कह सकते हैं कि आज की दुनिया अन्योन्याश्रित और परस्पर जुड़ी हुई हैय क्योंकि एक देश की बहुत अच्छी तरह से अन्य देशों के साथ सहयोग पर निर्भर करता है। 1950–1960 के दशक में, प्रत्येक कंपनी ने राष्ट्रीय सीमाओं द्वारा सीमित बाजार में काम किया। हालांकि, आज राष्ट्रीय सीमाओं के पार माल और सेवाओं की आवाजाही पर प्रतिबंध कम हो गया है और विश्व बाजार के अंतर्राष्ट्रीय निर्माता काफी आसानी से आगे बढ़ सकते हैं।

विश्व बैंक, अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) और विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) जैसे बहुपक्षीय संस्थानों को तीसरी दुनिया को 'वैश्वीकरण' की परियोजना में प्रवेश करने वाली एजेंसियों के रूप में देखा गया। पूरी दुनिया में टीएनसीकी लचीली और मुक्त गतिशीलता को सुगम बनाने के लिए नव–उदारवादी ताकतों द्वारा वैध और इंजीनियर बाजार संचालित कार्यक्रमों के लिए राष्ट्रीय राजनीतिक सीमाओं को पार करते हुए वाशिंगटन सर्वसम्मति 'का आगमन हुआ।

13.4.1 वैश्वीकरण के प्रतिकूल प्रभाव

अर्थव्यवस्था, राजनीति, समाज और पर्यावरण सभी वैश्वीकरण के प्रभाव से प्रभावित थे।

13.4.1.1 आर्थिक प्रभाव

'गरीबी और असमानता में वृद्धिः

दूसरे विश्व–युद्ध के बाद से गरीबी और असमानता के मुद्दे को दूर करने के लिए कई बहुपक्षीय और बहुपक्षीय संगठन/कार्यक्रम शुरू किए गए हैं। व्यापार और विकास पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन (यूएनसीटीएडी), न्यू इंटरनेशनल इकोनॉमिक ऑर्डर (एनआईईओ), सहस्त्राब्दी विकास लक्ष्य (एमडीजी) आदि दुनिया में गरीबीकम करने के यूटोपियन मामलों का लगातार पीछा करने के लगातार प्रयास हैं। इन सभी प्रयासों के बावजूद, कोई केवल गरीबी और बढ़ती असमानता के बीच में हैव्स और नो–नॉट्स, अंतर–राष्ट्रीय और अंतर–राष्ट्रीय रूप से नोटिस कर सकता है। वैश्वीकरण ने केवल इन विकृतियों को स्वीकार किया है (कुरियन, 2007)। चीन और भारत को छोड़कर अधिकांश तीसरी दुनिया के देशों में, नव–उदारवादी वैश्वीकरण के तहत व्यापक आर्थिक प्रदर्शन विनाशकारी था। इन देशों में भी, हालांकि राष्ट्रीय आय में उल्लेखनीय प्रगति, बेरोजगारी, और अमीरों और गरीबों के बीच असमानता का विस्तार हुआ, जिससे वैश्वीकरण विशाल आबादी के लिए काम करने में असमर्थ हो गया। किसानों की आत्महत्या, गरीबी से मौतें और सामाजिक समर्थन प्रणाली का टूटना भारत सहित सभी तीसरी दुनिया के देशों में व्याप्त है। अर्थशास्त्रियों ने पिछले 6 दशकों के वैश्वीकरण का विश्लेषण किया है और पाया है कि दुनिया के उन्नत औद्योगिक देशों, जैसे कि यूएस और ईयू ने लाभ का सबसे बड़ा हिस्सा प्राप्त किया और सबसे गरीब देश वास्तव में खराब हो गए हैं (स्टिग्लिट्ज, 2008)। उभरती हुई अंतर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को अक्सर कैसिनो अर्थव्यवस्था कहा जाता है, जहां मुख्य लेनदेन पैसे और वित्त प्रति सेगमेंट में होते हैं, और इसका वास्तविक अर्थव्यवस्था से कोई लेना–देना नहीं होता है। यह पूरी दुनिया की अर्थव्यवस्था को बहुत अस्थिर बनाता है। 1997–98 पूर्वी एशियाई मौद्रिक संकट को एक उदाहरण के रूप में उद्धृत किया जा सकता है। तृतीय विश्व के अधिकांश देश अब 'ऋण जाल' में हैं।

श्रम एवं बेरोजगारीः

जबकि वैश्वीकरण 'पूंजी' के लिए बहुत अनुकूल है, यह श्रम के लिए अनुकूल नहीं है। उत्पादन के एक परिवर्तनशील कारक के रूप में श्रम को डाउनग्रेड किया जाता है। किराया और आग, मानदंड बन गए हैं और विकसित देशों से बड़ी पेंशन और अन्य सार्वजनिक/निजी निधियों द्वारा निवेश विकासशील देशों में आराम से श्रम कानूनों पर निर्भर हैं। प्रौद्योगिकी में उन्नति भी नौकरियों के नुकसान को कम कर रही है। अधिकांश आधुनिक विनिर्माण संयंत्र श्रम कल्याण की तुलना में स्वचालन पर अधिक

निवेश करते हैं। केवल अत्यधिक कुशल प्रबंधकीय सफेद कॉलर नौकरियां नीले कॉलर वाले की जगह ले रही हैं। श्रम औद्योगिक क्षेत्रों की ओर पलायन कर रहा है, जबकि वैश्विक पूंजी उड़ान–से अधिक सुगम श्रम भूगोल के लिए रवाना हो रही है और वैश्विक स्तर पर शोषण के मॉडल की नकल करना इस दुनिया ने पहले कभी नहीं देखा है।

13.4.1.2 राजनीतिक प्रभाव

वैश्वीकरण के साथ विद्वानों को जो दूसरा प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है, वह राजनीतिक है और वैश्विक स्तर पर राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाओं की अन्योन्याश्रयता के कारण संभावित क्षेत्रीय या वैश्विक अस्थिरता से संबंधित है। यह भी एक लॉन में सभी फूलों से एक तितली नालियों के रूप में तितली प्रभाव के रूप में कहा जाता है। आज की वैश्वीकृत दुनिया में, राष्ट्रीय सुरक्षा और राष्ट्र–राज्य अन्य देशों की गतिविधियों और पड़ोसी राज्यों में सरकारों के निर्णयों पर निर्भर हैं। (माइकल 2005)। किसी देश में स्थानीय आर्थिक उतार–चढ़ाव या संकट के क्षेत्रीय या वैश्विक प्रभाव हो सकते हैं। नव–उदारवादी वैश्वीकरण में–नव–रूढ़िवाद '(नियोकॉन्स) में एक राजनीतिक जुड़वां है। अमेरिका इसके संरक्षक होने का दावा करता है। नव–विपक्ष लोकतंत्र 'के अपने संस्करण के लिए तर्क देते हैं। यदि कोई राज्य इसमें सफल नहीं होता है, तो वे इसे एक 'दुष्ट राज्य' के रूप में ब्रांड कर सकते हैं; इराक पर हमला एक ऐसा मामला है और उत्तर कोरिया और ईरान में शासन लगातार खतरे में है। नव–उदारवाद और नव–रूढ़िवाद के तहत राष्ट्रीय राजनीति को छेड़ा जाता है और अमेरिकी दिक्कों को उपकृत करने के लिए वातानुकूलित किया जाता है। बदले हुए राजनीतिक परिदृश्य में, तीसरी दुनिया की सरकारों को अक्सर वैश्विक पूंजी हितों के प्रति जवाबदेह बनाया जाता है, न कि उन लोगों के हितों के प्रति, जिन्होंने उन्हें अपने हितों की रक्षा करने की शक्ति दी है (कुरियन 2007)।

13.4.1.3 सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रभाव

वैश्वीकरण ने मूर्त मानकों और सांस्कृतिक विचारों के अभूतपूर्व सामंजस्य को उजागर किया है। विविधता को एक उन्मूलन के रूप में देखा जाता है, और अकेले एक क्षणिक उत्सव के योग्य। एक वैश्विक बाजार और वर्तमान पूंजीवादी वैश्वीकरण का मुख्य लक्ष्य स्पष्ट रूप से धन का तेजी से संचय हो गया है। भौतिक सफलता जीवन का अंतिम लक्ष्य बन गई है और एक व्यक्ति (कुरियन 2007) के सामान्य पाठ्यक्रम के रूप में है। वैश्वीकरण ने 'समुदाय' और एक व्यक्ति को गंभीर रूप से प्रभावित किया है और उसकी/उसकी स्वतंत्रता तर्कसंगत विकल्प की एक वेदी बन गई है। स्वार्थ और हिंसा जैसे मूल्य मानवीय मूल्यों को विस्थापित कर रहे हैं। वैश्वीकरण की आड़ में अनैतिकता प्रजनन कर रही है।

13.4.1.4 पर्यावरण असंतुलन

वैश्वीकरण का एक गंभीर खतरा पर्यावरण पर है। पृथ्वी के जीवन में तेजी से हो रहे मौसम संबंधी परिवर्तनों से 'हमारा सामान्य भविष्य' खतरे में है। वैश्वीकरण टीएनसीको सक्षम बनाता है और अक्सर पर्यावरण की कीमत पर धन का उत्पादन करने के लिए बड़े देशों द्वारा समर्थित होता है। इस तरह से वैश्वीकरण के भविष्य के लिए गंभीर परिणाम होने की संभावना है।

वर्तमान वैश्वीकरण, जितना शक्तिशाली दिखाई दे सकता है, उतना ही अस्थिर है। यह एक ओर समाज और प्रकृति की रक्षा करने में असमर्थ है, और दूसरी ओर अपने स्वयं के बाजारों की संभावित अराजकता से पूंजी की रक्षा करने में असमर्थ है। क्या एक वैकल्पिक वैश्वीकरण संभव है?

अपनी प्रगति की जांच करें अभ्यास 3

नोटः i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का उपयोग करें।

ii) अपने उत्तर के लिए सुझावों के लिए इकाई के अंत में देखें।

1. वैश्वीकरण के प्रभावों का संक्षेप में वर्णन करें।

.....

.....

.....

.....

.....

13.5 वैश्वीकरण के विकल्प

वैश्वीकरण के विकल्पों की तलाश में, मैथ्यू कुरियन (2007) ने दो सिंडोमों, अर्थात् टीना और टीएएमए सिंडोमों का उल्लेख किया। कोई विकल्प नहीं है (टीना), वैश्वीकरण के रक्षक यह मानते हैं कि वैश्वीकरण का कोई सैद्धांतिक और व्यावहारिक विकल्प नहीं है। दूसरी ओर, कई विकल्प हैं (टीएएमए) स्कूल एक विविध सैद्धांतिक और साथ ही पूंजीवादी वैश्वीकरण के लिए व्यावहारिक विकल्प सुझाता है।

13.5.1 सैद्धांतिक दृष्टिकोणः

वैश्वीकरण के लिए विकल्पों का सैद्धांतिक निर्माण शुरू करने के लिए हम कार्ल पोलानी की (1957) अवधारणा को 'अंतर्निहित' कर सकते हैं। उनका तर्क है, प्रागैतिहासिक पूंजीवाद के तहत, अर्थव्यवस्था समाज में अंतर्निहित थी, इसलिए सामाजिक नियमों और प्रथाओं ने आर्थिक गतिविधियों को नियंत्रित किया। इस चरण में, धर्म और नैतिकता ने अर्थव्यवस्था पर जबरदस्त प्रभाव डाला। लेकिन जब 18 वीं शताब्दी में पूंजीवाद का उदय हुआ, तो अर्थव्यवस्था समाज से दूर हो गई। पूंजीवादी इस समय के शास्त्रीय और नव–शास्त्रीय स्कूलों के राजनीतिक अर्थशास्त्रियों का दावा करते थे कि एक मुक्त बाजार अर्थव्यवस्था सहज रूप से 'बुनियादी आर्थिक समस्या' को सबसे कुशलता से हल करेगी। तथाकथित अदृश्य हाथ 'या' बाजार तंत्र 'ने इस प्रसार–सक्षमता को सक्षम किया। बाजार के कानूनों, मुख्य रूप से मांग के कानून और आपूर्ति के कानून द्वारा आर्थिक निर्णय लिए गए।

वैश्वीकरण पूंजीवाद के लिए अधिक गंभीर सैद्धांतिक चुनौती अर्थशास्त्रियों ने कार्ल मार्क्स, जे.एम. केन्स और कई अन्य लोगों द्वारा प्रस्तुत की थी। मार्क्स ने कहा कि सर्वहारा वर्ग द्वारा संचालित राज्य कुशल आर्थिक प्रशासन के लिए सबसे अच्छी एजेंसी होगी। बाद में, लेनिन ने संसाधनों के कुशल आवंटन और कुल उपज के वितरण के लिए एक वैकल्पिक तंत्र के रूप में आर्थिक नियोजन की शुरुआत की

(कुरियन, 2007)। महान मंदी की पृष्ठभूमि में, जे.एम. कीन्स ने स्थिर विकास पथ के माध्यम से अर्थव्यवस्था को चलाने के लिए 'राजकोषीय इंजीनियरिंग' के साथ अर्थव्यवस्था में राज्य की भागीदारी को प्रमाणित किया। जब द्वितीय विश्व युद्ध के बाद के युग में तीसरी दुनिया का गठन किया गया था, तो सरकार को सामाजिक कल्याण को अधिकतम करने के लिए सामाजिक और आर्थिक एजेंसी की भूमिका सौंपी गई थी और विकास योजना को इसे प्राप्त करने के साधन के रूप में निर्धारित किया गया था। लेकिन 20 वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में दुनिया के सभी हिस्सों में 'राज्य की विफलताएं' थीं।

13.5.2 व्यावहारिक विकल्प

विद्वानों द्वारा चर्चा किए जाने वाले कई व्यावहारिक विकल्प हैं:

आत्म निर्भरता को बढ़ावा:

अर्थव्यवस्था को विभिन्न स्तरों पर देखा जा सकता है, परिवारसे गांव तक, राज्य से राष्ट्र तकआदि प्रत्येक स्तर पर, सापेक्ष आत्मनिर्भरता होनी चाहिए। उदाहरण के लिए, परिवार को अपने उत्पादक संसाधनों को इस तरह से नियोजित करना है जैसे कि अपनी 'जरूरतों' को पूरा करने के लिए सामान प्रदान करना है। सदस्यों और सहभागी निर्णय लेने के सहकारी प्रयास बहुत महत्वपूर्ण हैं। परिवार में महिला को पुरुष सदस्यों के बराबर दर्जा दिया जाना चाहिए। इसी प्रकार, ग्रामीण स्तर पर लोगों को जो कुछ भी आवश्यक होता है, उसे उसके भौगोलिक इलाके के भीतर जितना संभव हो उतना उत्पादन किया जाना चाहिए। राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर विदेशी सहायता और उधार पर निर्भरता को समाप्त करना बेहतर होगा। विदेशी ऋण साम्राज्यवादी वैश्वीकरण की सुविधा के लिए एक जाल है (कुरियन, 2007)।

'बुरे' और 'उपभोक्तावाद'से बचना:

टीएनसी वैश्वीकरण के मुख्य लाभार्थी हैं। विभिन्न तरीकों से वे अपने बाजार को बनाए रखने के लिए संभावित उपभोक्ताओं को पालतू बनाते हैं। टीएनसीके अधिकांश उत्पाद आम लोगों के लिए आवश्यक नहीं हो सकते हैं, लेकिन 'उपभोक्तावाद' के कारण वे इन सभी को खरीदने के लिए मजबूर हैं। उपभोक्तावाद लोगों को ऋणग्रस्त करने और यहां तक कि आत्महत्या के लिए प्रेरित कर रहा है।

आईटी द्वारा 'समुदायों'का पुनर्निर्माण:

वैश्वीकरण 'समुदाय' का विखंडन करता है। लेकिन वैश्वीकरण के माध्यम से विकसित मीडिया को प्रभावी ढंग से समुदाय को फिर से बनाने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। मीडिया की भूमिका एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है और इसलिए मीडिया को निष्पक्ष और अधिक खुला होना चाहिए। मीडिया आजकल उपभोक्तावादी ताकतों द्वारा संचालित है, न कि सभी नागरिकों द्वारा। दुनिया भर के लोगों को यह पहचानने में मदद नहीं की जा रही है कि सबसे महत्वपूर्ण मुद्दे – भीड़भाड़ वाले शहर, नए संक्रमणों का त्वरित प्रसार, ग्लोबल वार्मिंग, दुनिया भर में असमानता का विकास, पर्यावरण का विनाश – ये सभी वैश्वीकरण नामक एक ही वैश्विक प्रक्रिया का हिस्सा हैं। लोगों को इस बात की जानकारी होनी चाहिए कि ये मुद्दे सिर्फ घटित नहीं होते हैं, बल्कि ये सभी संबंधित हैं (कैवनघ, मंडेर, 2004)।

क. विकेंद्रीकृत योजनाः

विकेंद्रीकृत राजनीति को सही ढंग से संचालित करना और नियोजन वैश्वीकरण से लड़ने के लिए एक संभावित हथियार हो सकता है। ग्रासरूट सामाजिक और आर्थिक संस्थान जैसे स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) आदि लोगों को वैश्वीकरण को रोकने के लिए सक्षम कर सकते हैं (कुरियन, 2007)। राज्यों को पहले अधिक स्थानीय उन्मुख होना चाहिए और पहले राष्ट्रीय समस्याओं को हल करना चाहिए, लेकिन साथ ही उन्हें वैश्विक मुद्दों पर तुरंत प्रतिक्रिया करने में सक्षम होना चाहिए, क्योंकि राज्यों को वैश्विक शासन का निर्धारण करने में आवश्यक अभिनेता होना जारी है। व्यवसाय की दुनिया में भी यही बात लागू होती है, वैश्विक प्रतिस्पर्धा में सफल होने के लिए, कंपनियों को ''विश्व स्तर पर सोचने और स्थानीय स्तर पर कार्य करने की आवश्यकता है''। अभ्यास से पता चलता है कि व्यवसाय जो संकीर्ण स्थानीय आवश्यकताओं के लिए विश्व स्तर पर डिजाइन करने में सक्षम हैं और जो ''आपकी दृष्टि को व्यापक बनाते हैं, फिर भी आपका ध्यान संकीर्ण करते हैं'' विकास और सफलता उत्पन्न करेंगे (पिंटो, 2004)। वैश्वीकरण का विचार है कि ''बड़ा बेहतर है'' गलत है। इसमें स्थानीय मुद्दों के साथ चिंता का अभाव और स्थानीयता पर हावी होना शामिल है। इस एजेंडे के संबंध में ग्लोकलाइजेशन की अवधारणा शुरू की गई है। यह 1980 के दशक के दौरान व्यापार शब्दजाल का एक पहलू बन गया, जो जापान से निकलता है, जहां विशेष और सार्वभौमिक के बीच संबंधों के सामान्य मुद्दे ने ऐतिहासिक रूप से लगभग ध्यान आकर्षित किया है (मियोशी और हारोटुनियन, 1989)। वैश्वीकरण एक दोहरी प्रक्रिया है – सबसे पहले, संस्थागत और विनियामक गतिविधियाँ राष्ट्रीय दायरे से ऊपर की ओर क्षेत्रीय या वैश्विक दायरे में और नीचे से व्यक्तिगत या स्थानीय के दायरे में चलती हैं। दूसरे, आर्थिक गतिविधियाँ और अंतर–फर्म नेटवर्क एक ही समय में परिवर्तित हो रहे हैं ताकि अधिक स्थानीयकृत और ट्रांसनैशनल बन सकें (स्वीनगेडोऊ, 2004)।

ख. बेहतर सहभागिता एवं समन्वयः

वैश्वीकरण और विश्व व्यापार के लाभों के रूप में अधिक संतुलन रखने के लिए, वैश्वीकरण को अधिक विनियमित किया जाना चाहिए और देशों को बेहतर सहयोग करना चाहिए। विकसित और विकासशील देशों को सहकारी रूप से कार्य करना होगा, ताकि गरीब और अमीर के बीच की खाई हर साल अधिक से अधिक चौड़ी न हो, लेकिन इसे संकीर्ण करना शुरू करना होगा। हालांकि, प्रभावी रूप से ऐसा करने के लिए कोई संस्थाएं, विशेष रूप से लोकतांत्रिक संस्थान नहीं हैं। वैश्वीकरण को अधिक प्रबंधनीय बनाने के लिए और इसे एकजुटता के सिद्धांतों के आधार पर लेने के लिए, संयुक्त राष्ट्र, विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) और अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) जैसे अंतर्राष्ट्रीय संगठनों की भूमिका को सुधारना और मजबूत करना महत्वपूर्ण है। । यह कुछ कार्यकर्ताओं द्वारा सुझाया गया है कि गैर–सरकारी संगठनों के साथ अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के संबंधों में सुधार (सुधार वैश्वीकरणः वेब) के लिए एक उदाहरण हो सकता है। बॉब डेकोन और उनके सहयोगियों (1997) के काम का मानना है कि वैश्विक कल्याण के सामाजिक कल्याण पर पड़ने वाले नकारात्मक प्रभावों को सबसे पहले सुपरनैशनल संस्थानों के माध्यम से संबोधित किया जा सकता है और इस लक्ष्य के लिए योगदान देने वाली कई बहुराष्ट्रीय एजेंसियों के काम पर चर्चा की जा सकती है। उनका तर्क है कि इन संगठनों को 'वैश्विक सरकार सुधार

एजेंडा' के रूप में वर्णित करने के लिए उन्हें लागू करना चाहिए। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सामाजिक कल्याण को बढ़ावा देने के लिए सहकारी प्रयासों को मजबूत करने की प्रतिबद्धता को भी उच्च प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

अपनी प्रगति की जांच करें अभ्यास 4

नोटः i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का उपयोग करें।

ii) अपने उत्तर के लिए सुझावों के लिए इकाई के अंत में देखें।

1. वैश्वीकरण के वैकल्पिक दृष्टिकोण के बारे में विस्तार से लिखें।

.....

.....

.....

.....

.....

13.6 सारांश

वैश्वीकरण ने विकसित और विकसित काउंटी के लिए नए अवसरों को लाया है। यह शीत युद्ध के बाद से वैश्विक राजनीति में अग्रणी प्रक्रिया है, जो परिवर्तन और निरंतरता को दर्शाता है। लेकिन वैश्वीकरण ने नई चुनौतियों को भी पार कर दिया है जैसे कि असमानता बढ़ रही है और राष्ट्रों के भीतर, वित्तीय बाजार में अस्थिरता और पर्यावरणीय गिरावट। वैश्वीकरण दुनिया के लोगों के लिए भारी लाभ का वादा करता है। इस वादे को वास्तविकता बनाने के लिए, हमें प्रक्रिया का सावधानीपूर्वक प्रबंधन करने का एक तरीका खोजना चाहिए। नकारात्मक प्रभावों को कम करने और यह सुनिश्चित करने के लिए बेहतर ध्यान दिया जाना चाहिए कि लाभ व्यापक रूप से और काफी वितरित किए गए हैं।

विद्वानों को लगता है कि वैश्वीकरण के वैकल्पिक रूपों पर विचार करना आवश्यक है, ऐसे रूप जो पूंजीवाद के कुछ सकारात्मक परिणामों को बनाए रख सकते हैं (जहां तक वे पूंजीवाद के बाहर मौजूद हो सकते हैं) एक नए चरण में संक्रमण में एक सामाजिक–आर्थिक प्रणाली के रूप में इसे पार करते हुए। विश्व इतिहास का। बेशक, ऐतिहासिक रूप से पूंजीवाद के कई विकल्प हैं और आज भी इसके कई विकल्प हैं, लेकिन उनमें से कोई भी बहुत लोकप्रिय नहीं है। वैकल्पिक वैश्वीकरण की मुख्य आवश्यकताएं सभी देशों, लोगों और देशों के लिए समानता हैं, साथ ही साथ मजबूत लोकतांत्रिक अंतरराष्ट्रीय संस्थानों की मदद से दुनिया के विकास के विशिष्ट क्षेत्रों का विनियमन भी है। इससे पता चलता है कि दुनिया के सतत विकास के लिए एक वैकल्पिक वैश्वीकरण आवश्यक है, और यदि दुनिया भर में सही कदम और प्रयास किए जाते हैं, तो वर्तमान वैश्वीकरण का एक विकल्प लागू करना संभव होगा। ऊपर वर्णित वैकल्पिक वैश्वीकरण सभी संकटों, विफलताओं और विचलन के बावजूद एकल वैश्विक समान और समृद्ध क्षेत्र के देशों और लोगों को एक साथ लाएगा, जो सभी के हित में है।

13.7 संदर्भ ग्रंथ

भगवती, जगदीश (2004), *इन डिफेंस ऑफ ग्लोबलाइजेशन,* न्यू डेल्ही : ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

कार्डोसो, एफ. एच. एण्ड फालेटो, ई. (1979), *डिपेंडेंसी एण्ड डेवलपमेंट इन लैटिन अमेरिका,* बर्केले : यूनिवर्सिटी ऑफ कैलीफोर्निया प्रेस।

फ्रैंक, ए.जी. (1967), *कैपिटलिज्म एण्ड अण्डरडेवपलपमेंट इन लैटिन अमेरिका,* न्यू यॉक : मन्थली रिव्यू प्रेस।

फ्रैंक, ए.जी. (1975), *ऑन कैपिटलिस्ट अण्डरडेवलपमेंट,* न्यू यॉर्क : ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी रिव्यू प्रेस।

गिल्पिन, रॉबर्ट (2003), *दि चैलेंजेज ऑफ ग्लोबल कैपिटलिज्म,* प्रिंसटन : प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस।

स्टेगेर, मैनफ्रेड बी. (2017), *ग्लोबलाइजेशन : ए वैरी शॉर्ट इंट्रोडक्शन,* यूके : ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

वाल्ट्ज, कैनेथ (1999), ''ग्लोबलाइजेशन एण्ड गवर्नेंस'', इन *पीएस : पॉलिटिकल साइंस एण्ड पॉलिटिक्स,* वॉल्यूम, नं.4 : 693–700

13.8 अपनी प्रगति की जांच करेंअभ्यासों के उत्तर

अपनी प्रगति की जांच करें अभ्यास 1

- आपके उत्तर में 1492 से लेकर आज तक की वैश्वीकरण की परिभाषाएं और इसके तीनों चरणशामिल होने चाहिए।

अपनी प्रगति की जांच करें अभ्यास 2

- वैश्वीकरण के यथार्थवादी, उदारवादी और मार्क्सवादी विवरण को शामिल करें

अपनी प्रगति की जांच करें अभ्यास 3

- आपके उत्तर में विभिन्न क्षेत्रों यानी आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक–सांस्कृतिक और पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभावों को शामिल होना चाहिए

अपनी प्रगति की जांच करें अभ्यास 4

- वैश्वीकरण के सैद्धांतिक और व्यावहारिक दृष्टिकोण शामिल करें

संदर्भ ग्रंथ

1. कैवेनाह, जे. एण्ड जे. मेण्डर (2004), *अल्टरनेटिव टू इकोनॉमी ग्लोबलाइजेशन : ए बेटर वर्ल्ड इज पॉस्सिबल,* बेर्रेट–कोहलेर।
2. डीकोन, बी., हुल्से, एम. एण्ड स्टब्ब्स, पी. (1997), *ग्लोबल सोशल पॉलिसी : इंटरनेशनल ऑर्गेनाइजेशन एण्ड दि फ्यूचर ऑफ वेल्फेयर,* लन्दन : सेज पब्लिकेशंस।
3. इवान्स, पीटर (2008), इज ऐन अल्टरनेटिव ग्लोबलाइजेशन पॉस्सिबल? *पॉलिटिक्स सोसाइटी,* 36 : 271–298, देखें – http://pas.sagepub.com/cgi/content/abstract/36/2/271 [Accessed 23 September 2018]
4. फ्राइडमैन, थॉमस एल. (2005), *दि वर्ल्ड इज फ्लैट : ए ब्रीफ हिस्ट्री ऑफ दि ट्वेंटी–फर्स्ट सेंचुरी,* न्यू यॉर्क : फर्रार : स्टॉस एण्ड गिरॉक्स।
5. गिड्डेन्स, एन्थॉनी (1990), *दि कंसीक्वेंसेज ऑफ मॉडर्निटी,* कैम्ब्रिज : पॉलिटी प्रेस।
6. हेल्ड, डेविड एण्ड, मैकग्रेव ए., (2002), *ग्लोबलाइजेशन ऐंटी ग्लोबलाइजेशन,* कैम्ब्रिज : कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।
7. हेल्ड, डेविड एण्ड, मैकग्रेव ए., (2002), *ग्लोबलाइजेशन थियरी : ऐप्रोचेज एण्ड कंट्रोवर्सीज,* पॉलिटी।
8. हर्स्ट, पॉल एण्ड ग्राहामे थॉम्पसन (1999), *ग्लोबलाइजेशन इन क्वेश्चन,* पॉलिटी प्रेस।
9. के.एच. ओ रॉकरे एण्ड जे. जी. विलियमसन (1999), *ग्लोबलाइजेशन एण्ड हिस्ट्री : दि इवॉल्यूशन ऑफ ए नाइनटींथ सेंचुरी ऐटलांटिक इकोनॉमी,* ऐकोर्न ग्राफिक्स सर्विसेज।
10. कुमार चंचल, लुंगिथियांग रियामी एण्ड संजू गुप्ता (2017), *अण्डरस्टैण्डिंग ग्लोबल पॉलिटिक्स,* न्यू डेल्ही : केडब्ल्यू पब्लिशर्स प्रा0 लि0।
11. कुरिआन, वी. मैथ्यू (2007), ''अल्टरनेटिव्स टू ग्लोबलाइजेशन : ए सर्च इन *मेंन्स्ट्रीम,* वॉल्यूम–एक्सएलवी, नं.35, सैचर्डे 18 अगस्त, 2007 https://www.mainstreamweekly. net/article287.html
12. Leslie Sklair, 2008. *The Emancipatory Potential of Generic Globalisation*, The Berkeley Electronic Press Available at:
13. लेस्ली स्कलायेर, (2008), *दि इमैनिसिपेट्री पोटेंशियल ऑफ जेनेरिक ग्लोबलाइजेशन,* दि बर्केले इलेक्ट्रॉनिक प्रेस, देखें – http://www.informaworld.com/smpp/content~content= a918201775&db=all [Accessed 23 October 2018]
14. मैकग्रेव, ऐन्थॅनी (2008), ''ग्लोबलाइजेशन एण्ड ग्लोबल पॉलिटिक्स'' इन जॉन बेलिस, ऐट आल., *दि ग्लोबलाइजेशन ऑफ वर्ल्ड पॉलिटिक्स,* ऑक्सफोर्ड: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

15. मैकलुहान, एम. (1962), *दि गुटेनबर्ग गैलेक्सी : दि मेकिंग दि टाइपोग्राफी मैन,* टोरोंटो : यूनिवर्सिटी ऑफ टोरोंटो प्रेस।

16. मिडग्ले, जेम्स (2007), ''पर्सपैक्टिव ऑन ग्लोबलाइजेशन, सोशल जस्टिस एण्ड वेल्फेयर'' इन *दि जर्नल ऑफ सोशियोलॉजी एण्ड सोशल वेल्फेयर,* वॉल्यूम–34, इश्यू–2, जून स्पेशल इश्यू ऑन ग्लोबलाइजेशन, सोशल जस्टिस एण्ड सोशल वेल्फेयर,
https://scholarworks.wmich.edu/cgi/viewcontent.cgi?article=3247&context=jssw

17. मिट्टलमैन, जेम्स (2006), *ग्लोबलाइजेशन एण्ड इट्स क्रिटिक्स इन : स्टब्स, रिचर्ड एण्ड जियेफ्रे अण्डरहिल, पॉलिटिकल इकोनॉमी एण्ड दि चेंजिंग ग्लोबल ऑर्डर,* ऑक्सफोर्डः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

18. मियोशी, मसाओ एण्ड हैरी डी. हरूट्यूनियन (1989), *पोस्टमॉर्डनिज़्म इन जापान,* ड्यूक यूनिवर्सिटी प्रेस।

19. ओहमी, केनिची (1995), *दि ऐण्ड ऑफ दि नेशन–स्टेट : दि राइज ऑफ रिजनल इकोनॉमिक्स,* न्यू यॉर्क : सिमोन एण्ड शस्टर आईएनसी.

20. पिंटो, जिम (2004), *थिंक ग्लोबलिटी एक्ट लोकली,* ऑटोमेशन वर्ल्ड।

21. पोलानयी (1957), *दि ग्रेट ट्रांस्फॉर्मेशन,* न्यू यॉर्क : बीकेन।

22. रीच, रॉबर्ट (1992), *दि वर्क ऑफ नेशंस : प्रिपेयरिंग अवरसेल्व्स फॉर ट्वेंटी फर्स्ट सेंचुरी कैपिटलिज़्म,* विंटेज बुक्स।

23. रॉबर्टसन, आर. (1992), ग्लोबलाइजेशन : सोशल थियरी एण्ड ग्लोबल कल्चर, थाउजैण्ड ऑक्स : सेज पब्लिकेशंस।

24. रॉबर्टसन, रोनाल्ड (1992), ग्लोबलाइजेशन : सोशल थियरी एण्ड ग्लोबल कल्चर, लन्दन, सेज।

25. शॉल्टे, जे. ए. (2000), *ग्लोबलाइजेशन : ए क्रिटिकल इंट्रोडक्शन,* न्यू यॉर्क : पालग्रेव।

26. शॉल्टे, जैन आर्ट (2005), *ग्लोबलाइजेशन : ए क्रिटिकल इंट्रोडक्शन,* लंदन : पालग्रेव।

27. स्टेफैनोवी, जोरान (2008), *ग्लोबलाइजेशन : थियरिटिकल पर्सपेक्टिव्ज, इम्पैक्ट्स एण्ड इंस्टीच्यूशनल रिसपोंस ऑफ दि इकोनॉमी,* http://facta.junis.ni.ac.rs/eao/eao200803/eao 200803-09.pdf, [Accessed on 30 September, 2018].

28. स्टिग्लिट्ज, जे.ई. (2008), मेकिंग ग्लोबलाइजेशन वर्क, इन *दि इकोनॉमिक एण्ड सोशल रिव्यू,* कोलम्बिया यूनिवर्सिटी प्रेस, यूएसए, 39 (3)

29. स्वयगेडॉव, ऐरिक (2004), ग्लोबलाइजेशन ऑर ग्लोकलाइजेशन? नेटवर्क्स, टेरिटरीज एण्ड रिस्केलिंग, इन *कैम्ब्रिज रिव्यू ऑफ इंटरनेशनल अफेयर्स,* 17 (1) : 25–44

30. *दि अल्टर्नेटिव ग्लोबलाइजेशन :*
https://www.ukessays.com/essays/international-relations/the-alternative-globalisation.php, [Accessed 23 September 2018].

31. वालर्स्टीन, आई. (1980), *दि कैपिटलिस्ट वर्ल्ड इकोनॉमी,* न्यू यॉर्कः कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।

32. वालर्स्टीन, इम्मेनुएल (2004), *वर्ल्ड सिस्टम एनालाइसिस : एन इंट्रोडक्शन,* डुर्हान : ड्यूक यूनिवर्सिटी प्रेस।

33. जुर्न, माइकेल (2005), *फ्रॉक इंटरडिपेंडेंस टू ग्लोबलाइजेशन, हैण्डबुक चह इंटरनेशनल रिलेशंस, लंदन : सेज पब्लिकेशंस*

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

ग्रंथ–सूची

आचार्य, अमिताभ, ऐट. आल., (ऐडिटर्स) (2006) *स्टडींग नॉन–ट्रैडिशनल सिक्यूरिटी इन एशिया : ट्रेण्ड्स एण्ड इशूज,* सिंगापोर : मार्शल कैवेंडिश।

आचार्य, भैरव, (2016) ''दि फ्यूचर ऑफ ऐजाइलम इन इण्डिया : फोर प्रिंसिपल्स टू ऐप्रेज रिसेंट लेजिस्लेटिव प्रोपोजल्स'', इन *एनयूजेएस लॉ रिव्यू,* 9

अल्कीरे, साबिना, (2003), *ए कॉन्सेप्चुअल फ्रेमवर्क फॉर ह्यूमन सिक्यूरिटी,* (सीआरआईएसई), वर्किंग पेपर 2, लन्दन, यूनिवर्सिटी ऑफ ऑक्सफोर्ड

ऐण्डर्सन, बेनेडिक्ट (1991), *इमैजिन्ड कम्यूनिटीज,* लन्दन : वर्सो।

अप्पादुराय, ए. (1996), *मॉडर्निटी ऐट लार्ज : कल्चरल डामेंशंस ऑफ ग्लोबलाइजेशन,* मिनीपोलिस, एम.एन. यूनिवर्सिटी ऑफ मिन्नेसोटा प्रेस।

ऐरॉन, रेमण्ड (1966), *पीस एण्ड वार : ए थियरी ऑफ इंटरनेशनल रिलेशंस, अनुवाद – रिचर्ड हॉवर्ड एण्ड ऐनेटे बेकर फॉक्स, गार्डन सिटी, न्यू यॉर्क डबलडे।*

बुरूआह, एस., (ऐडिटेड) (2009), *बियॉण्ड काउण्टर–इन्सर्जेंसी : ब्रेकिंग दि इम्पैसे इन नॉर्थईस्ट इण्डिया*।

बेलिस, जॉन, स्टीव स्मिथ एण्ड पैट्रिसिया ओवेंस, (ऐडिटर्स) (2001), *दि ग्लोबलाइजेशन दि वर्ल्ड पॉलिटिक्स : ऐन इंट्रोडक्शन टू इंटरनेशनल रिलेशंस,* सेकेण्ड ऐडिशन, ऑक्सफोर्ड : ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

बेक, अलरिच, (1992), *रिस्क सोसाइटी : टूवर्ड्स ए न्यू मॉडर्निटी,* लन्दन : सेज।

बेह्र, हर्टमुट एण्ड ऐमेलिआ हीथ (2009), ''मिसरीडिंग इन आईआर थियरी एण्ड आइडियोलॉजी क्रिटिक : मोर्गेन्थाउ, वाल्ट्ज एण्ड नियो–रियलिज्म'' *रिव्यू ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज,* 35 (2) : 327–349

बेह्र, हर्टमुट (2010), *हिस्ट्री ऑफ इंटरनेशनल पॉलिटिकल थियरी : ऑन्टोलॉजीज ऑफ दि इंटरनेशनल,* हॉण्डमिल्स : पालग्रेव मैकमिलन।

बीट्ज, चार्ल्स (1997), पॉलिटिकल थियरी एण्ड इंटरनेशनल रिलेशंस, प्रिंसटन : प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस।

बेल, डंकेन (ऐडिटेड) (2008), *पॉलिटिकल थॉट इन इंटरनेशनल रिलेशंस : वैरिएशंस ऑन ए रियलिस्ट थीम,* ऑक्सफोर्ड : ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

भगवती, जगदीश (2004), *इन डिफेंस ऑफ ग्लोबलाइजेशन,* न्यू डेल्ही : ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

ब्लैकमोरे, जे. (2000), ग्लोबलाइजेशन, ए यूजफुल कॉन्सेप्ट फॉर फेमिनिस्ट रिथिंकिंग थियरी एण्ड स्ट्रटजीज इन ऐडुकेशन, इन *ग्लोबलाइजेशन एण्ड ऐडुकेशन, क्रिटिकल पर्सपेक्टिव्ज* (ऐटिर्स) एन. सी., बुर्बुलेज एण्ड सी.ए. टेर्रेस, लन्दन : रूटलेज।

बोलेव्स्की, विलफ्राइड, (2007), *डिप्लोमेसी एण्ड इंटरनेशनल लॉ इन ग्लोबलाइज्ड रिलेशनशिप,* स्प्रिंगर, बर्लिन।

बूथ, केन एण्ड स्टीव स्मिथ (ऐडिटर्स) (1995), *इंटरनेशनल रिलेशंस थियरी टूडे,* कैम्ब्रिज : पॉलिटी।

बॉशर, डेविड (1998), *थियरीज ऑफ इंटरनेशनल रिलेशंस : थ्यूसिडाइड्स टू दि प्रेजेंट,* ऑक्सफोर्ड : ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

ब्राउन, क्रिस (2001), *अंडरस्टैंडिंग इंटरनेशनल रिलेशंस,* सेकेण्ड ऐडिशन, न्यू यॉर्क : पालग्रेव।

बुल, हेड्ले (1977), *दि ऐनार्किकल सोसाइटी : ए स्टडी ऑफ ऑर्डर इन वर्ल्ड पॉलिटिक्स,* ऑक्सफोर्ड : क्लेरेण्डन प्रेस।

बुल, हेड्ले (1995), ''दि थियरी ऑफ इंटरनेशनल पॉलिटिक्स 1919–1969'', इन *इंटरनेशनल थियरी : क्रिटिकल इन्वेस्टिगेशन,* जे. डेन डेरिआन (ऐडिटेड), लंदन : मैकमिलन, 181–211

बटरफील्ड, हर्बर्ट एण्ड मार्टिन व्हिट (ऐडिटर्स) (1966), *डिप्लोमैटिक इन्वेस्टिगेशंस : ऐसेज इन दि थियरी ऑफ इंटरनेशनल पॉलिटिक्स, कैम्ब्रिज, एम.ए. हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।*

बुजान, बैरी (2004), *फ्रॉम इंटरनेशनल टू वर्ल्ड सोसाइटी,* कैम्ब्रिज : कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।

कैबैल्लेरो–एन्थॉनी, मेलै ऐट. आल. (ऐडिटर्स) (2017), *नोन–ट्रैडिशनल सिक्यूरिटी इन एशिया : डिलेमाज इन सिक्यूरिटाइजेशन,* हैम्पशीरे : एश्गाटे।

कार्डोसो, एफ, एच. एण्ड फलेटो, ई. (1979), *डिपेंडेंसी एण्ड डेवलपमेंट इन लैटिन अमेरिका,* बर्केले : यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस।

कार्नोय, एम. (1999), *ग्लोबलाइजेशन एण्ड ऐडुकेशनल रिफॉर्म : व्हाट प्लेयर्स ट्राइड टू नो,* पेरिस : यूनेस्को।

कार्नोय, मार्टिन (1999), *सस्टेनेबल फ्लेक्सिबिलिटी : वर्क फैमिली एण्ड कम्यूनिटी इन दि इंफोर्मेशन ऐज,* न्यू यॉर्क : कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।

कैरोलीन, थॉमस, (2000), *ग्लोबल गवर्नेंस, डेवलपमेंट एण्ड ह्यूमन सिक्यूरिटी : दि चैलेंजेज ऑफ पूवर्टी एण्ड इनइक्वेलिटी,* लन्दन : प्ल्यूटो प्रेस।

कार्र, ई. एच., (2001), *दि ट्वेंटी ईयर्स' क्राइसिस, 1919–1939 : ऐन इंट्रोडक्शन टू स्टडी इंटरनेशनल रिलेशंस,* न्यू यॉर्क : पालग्रेव।

कास्टेल्स, मैनुएल (1996), *दि इंफोर्मेशन ऐज : इकोनॉमी, सोसाइटी एण्ड कल्चर, वॉल्यूम–1 दि राइज ऑफ दि नेटवर्क सोसाइटी,* ऑक्सफोर्ड : ब्लैकवेल।

काकवेल, जॉर्ज (1997), *थ्यूसिडाइड्स एण्ड दि पेलोपोन्नेशियन वार,* लंदन : रूटलेज।

Chima, J.S. (2010),*The Sikh Separatist Insurgency: Political Leadership and Ethnonationalist*

चीमा, जे. एस. (2010), *दि सिख सैपरेटिस्ट इंसर्जेंसी : पॉलिटिकल लीडरशिप एण्ड एथ्नोनेशनलिस्ट*।

चिन, क्रिस्टाइन बी.एन. एण्ड जेम्स एच. मिट्टलमैन, (2000), ''कॉन्सेप्चुअलाइजेशन रेजिस्टेंस टू ग्लोबलाइजेशन,'' इन बैरी के. गिल्स (एड.), *ग्लोबलाइजेशन एण्ड दि पॉलिटिक्स ऑफ रजिस्टेंस,* लंदन एण्ड न्यू यॉर्क : मैकमिलन प्रैस लि. एण्ड स्ट. मार्टिन'ज प्रैस आईएनसी.

कोहेन, बेंजामिन जे. (2011), ''इंट्रोडक्शन'' इन बेंजामिन, जे. कोहेन, ऐडिटेड, *इंटरनेशनल पॉलिटिकल इकोनॉमी,* न्यू यॉर्क : रूटलेज।

कॉक्स, आर. डब्ल्यू (1981), ''सोशल फोर्सेज, स्टेट्स एण्ड वर्ल्ड ऑर्डर्स : बियॉण्ड इंटरनेशनल रिलेशंस थियरी'' *मिलेनियम : जर्नल ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज,* वॉल्यूम 10, 1981

कॉक्स, रॉबर्ट डब्ल्यू (1986), *न्यो–रियलिज्म एण्ड इट्स क्रिटिक्स,* न्यू यॉर्क : कोलम्बिया यूनिवर्सिटी प्रेस, 204–254

डी. हेल्ड (ऐडिटेड), *ए ग्लोबलाइजेशन वर्ल्ड? कल्चर, इकोनॉमिक, पॉलिटिक्स,* लंदन, न्यू यॉर्क : रूटलेज : दि ओपन यूनिवर्सिटी।

डैडवाल, शेबन्ती रे एण्ड उत्तम कुमार सिन्हा (ऐडिटेड) (2015), *नॉन–ट्रैडिशनल सिक्यूरिटी चैलेंजेज इन एशिया : अप्रोचेज एण्ड रिस्पोंसेज,* रूटलेज।

डैंग, एन. (2005), ऑन दि नेशनल लिटरेचर'ज टैक्टिस इन दि ग्लोबलाइजेशन'ज लैंगुएज इन्वायरन्मेंट, *जर्नल ऑफ ह्यूमन इंस्टीच्यूट ऑफ ह्यूमनिटीज, साइंस एण्ड टैक्नोलॉजी,* 1, 39–41

Der Derian, James (ed.), 1995. *International Theory: Critical Investigations*, London: Macmillan.

डेर डेरिआन, जेम्स (ऐडिटेड). (1995), *इंटरनेशनल थियरी : क्रिटिकल इन्वेस्टिगेशंस,* लंदन : मैकमिलन।

डैस्टेच, क्लॉज गुण्टर एण्ड बर्नहार्ड स्पेयेर (ऐडिटर्स) (2001), *दि वर्ल्ड ऑर्गेनाइजेशन मिलेनियम राउण्ड : फ्री ट्रेड इन दि ट्वेंटी–फर्स्ट सेंचुरी,* न्यू यॉर्क : रूटलेज।

डोह, जोनाथन पी., एण्ड हिल्डी टीगेन (2003), ''ग्लोबलाइजेशन एण्ड एनजीओ'ज : ट्रांसफोर्मिंग बिजनेस, गवर्नमेंट एण्ड सोसाइटी'', *जर्नल ऑफ इंटरनेशनल बिजनेस स्टडीज,* 565–66

Donnelly, Jack, 2000. *Realism and International Relations*, Cambridge: Cambridge University Press.

डोनेली, जैक (2002), *रियलिज्म एण्ड इंटरनेशनल रिलेशंस,* कैम्ब्रिज : कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।

डॉलाह, कैफ (ऐडिट) (2004), *बैकवार्टर्स ऑफ ग्लोबल प्रॉस्पैरिटी : हाउ फोर्सेज चह ग्लोबलाइजेशन एण्ड जीएटीटी/डब्ल्यूटीओ ट्रेड रिजाइम्स कंट्रीब्यूट टू दि मार्जिनलाइजेशन ऑफ दि वर्ल्ड पूअरेस्ट नेशंस,* वेस्टपोर्ट : प्रीगेर

डोयले, माइकेल डब्ल्यू. (1997), *वेज ऑफ वार एण्ड पीस : रियलिज्म, लिबर्लिज्म एण्ड सोशलिज्म,* न्यू यॉर्क : नॉर्टन।

डन्निंग जॉन, एच. एण्ड एस. एम. लुण्डन (2008), *मल्टिनेशनल इण्टरप्राइजेज एण्ड दि ग्लोबल इकोनॉमी,* चेल्टेनहान : ऐडवर्ड एल्गर पब्लिशिंग।

इलियट, लॉर्रेन (2004), *दि ग्लोबल पॉलिटिक्स ऑफ दि इन्वायरमेंट,* न्यू यॉर्क : पालग्रेव मैकमिलन।

हेवूड, वी.एच. एण्ड के. गार्डनर, (ऐडिटर्स) (1995), *ग्लोबल बायोडावर्सिटी,* न्यू यॉर्क : पालग्रेव, मैकमिलन।

इमर्सन, डोनाल्ड, के., (ऐडिटेड) (2009) *हार्ड च्वाइसेज : सिक्यूरिटी, डैमोक्रेसी एण्ड रीजनलिज़्म इन साउथईस्ट एशिया,* सिंगापोर : यूटोपीया प्रेस।

फावरेकर, जे. (1995), *थियराइजिंग सोशल मूवमेंट्स,* लंदन : प्ल्यूटो प्रेस।

फ्रैंक, ए.जी. (1967), *कैपिटलिज्म एण्ड अण्डरडेवपलपमेंट इन लैटिन अमेरिका,* न्यू यॉक : मन्थली रिव्यू प्रेस।

फ्रैंक, ए.जी. (1975), *ऑन कैपिटलिस्ट अण्डरडेवलपमेंट,* न्यू यॉर्क : ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी रिव्यू प्रेस।

फ्राइडमैन, जे. (1994), *कल्चर आइडेंटिटी एण्ड ग्लोबल प्रोसेस,* यू.के. : सेज।

फ्राइडमैन, टी. (1999), *दि लेक्सस एण्ड दि ऑलिव ट्री,* न्यू यॉर्क : फर्रार स्ट्रास गिरॉक्स।

गांगुली, सुमित, मंजीत परदेसी एण्ड निकोलस ब्लेरल, (ऐडिटेड) (2017), *दि ऑक्सफोर्ड टू इंडिया'ज नैशनल सिक्यूरिटी,* न्यू डेल्ही : ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

गांगुली, सुमित (2016), *डैड्ली इम्पैसे : इण्डो–पाकिस्तान रिलेशंस ऐट दि डाउन ऑफ ए न्यू सेंचुरी,* कैम्ब्रिज : कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।

ग्रीट्ज, क्लिफोर्ड (1973), रिलिजन ऐज ए कल्चरल सिस्टम, *दि इंटरप्रिटेशन ऑफ कल्चर'ज,* न्यू यॉर्क : बेसिक बुक्स।

गिब्सन, जे., एण्ड डी., मैककैंज़ी, (2011), *ऑस्ट्रेलिया'ज पेसिफिक सीजनल वर्कर पाइलट स्कीम : डेवलपमेंट इम्पैक्ट्स इन दि फर्स्ट टू इयर्स,* न्यूजीलैण्ड : यूनिवर्सिटी ऑफ वैकाटो।

गिड्डेन्स, ऐन्थोनी (1999), *रनवे वर्ल्ड : हाउ ग्लोबलाइजेशन इज रिशेपिंग आवर लाइव्स,* लन्दन : प्रोफाइल्स बुक्स लिमिटेड।

गिल, स्टीफन (2000), टूवर्ड ए पोस्टमॉर्डर्न प्रिंस? दि बैटल ऑफ सीटल ऐज ए मोमेंट इन दि न्यू पॉलिटिक्स ऑफ ग्लोबलाइजेशन, *मिलेनियम : जर्नल ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज,* 29.1 : 131–140

गिल्स, बैरी के., (2000) (एडिटेड), *ग्लोबलाइजेशन एण्ड दि पॉलिटिक्स ऑफ रजिस्टेंस,* न्यू यॉर्क, स्ट. मार्टिन'ज प्रैस

गिप्लिन, रॉबर्ट (1987), *दि पॉलिटिकल इकोनॉकी ऑफ इंटरनेशनल रिलेशंस,* न्यू जर्सी : प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस।

गिप्लिन, रॉबर्ट (2001), *ग्लोबल पॉलिटिकल इकोनॉकी : अण्डरस्टैंडिंग दि इंटरनेशनल इकोनॉमिक्स ऑर्डर,* न्यू जर्सी : प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस।

गिल्पिन, रॉबर्ट (2003), *दि चैलेंजेज ऑफ ग्लोबल कैपिटलिज्म,* प्रिंसटन : प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस।

गोक्सेल, निलूफर काराकासुलू (2012), ''ग्लोबलाइजेशन एण्ड दि स्टेट'' http://sam.gov.tr/wp-content/uploads/2012/02/1.-NiluferKaracasuluGoksel.pdf.

गोर्डन, सुज़ाने ई., (2008), ''चेंजिंग कॉन्सेप्ट ऑफ सावरींटी एण्ड ज्यूरिस्डिक्शन इन दि ग्लोबल इकोनॉमी : इज दियर ए टेरीटोरियल कनेक्शन?'' *यॉर्क यूनिवर्सिटी.* http://ccges. apps01.yorku.ca/wp/wp-content/uploads/2008/12/gordon-changing-concepts-of-sovereignty-and-jurisdiction-in-the-global-economy-is-there-a-territorial-connection.pdf.

ग्रे, जॉन (1995), *लिबर्लिज्म,* बकिंघम : ओपन यूनिवर्सिटी प्रेस।

ग्रीग, जे. माइकेल (2002), दि ऐण्ड ऑफ जियोग्राफी? : ग्लोबलाइजेशन, कम्यूनिकेशंस एण्ड कल्चर इन दि इंटरनेशनल सिस्टम, *दि जर्नल ऑफ कॉन्फ्लिक्ट रिजोल्यूशन,* वॉल्यूम–46, नं.2, अप्रैल, 225–243

गुस्टाफ्सन, लावेल एस. (ऐडिटेड) (1998), *थ्यूसिडाइड्स' थियरी ऑफ इंटरनेशनल रिलेशंस,* बेटन रूज : लूइसियाना स्टेट यूनिवर्सिटी प्रेस।

गुज्जिनी, स्टेफानो (1998), *रियलिज्म इन इंटरनेशनल रिलेशंस एण्ड इंटरनेशनल पॉलिटिकल इकोनॉमी : दि कंटीन्यूइंग स्टोरी ऑफ ए डेथ फोरटोल्ड,* लंदन : रूटलेज।

हार्बर, फ्रांसेज वी., (1999), *थिंकिंग अबाउट इंटरनेशनल ऐथिक्स,* बुल्डर : वेस्टव्यू।

हार्ड्ट, एम. एण्ड ए. नेग्री (2000), *ऐम्पायर,* कैम्ब्रिज : हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

हार्ड्ट, एम. एण्ड ए. नेग्री (2004), *मल्टिट्यूड : वार एण्ड डैमोक्रेसी इन दि एज ऑफ ऐम्पायर,* न्यू यॉर्क : दि पेंगुईन प्रेस।

हायेस, रिचर्ड डी., क्रिस्टोफर एम., कोर्थ, मनुचेर रॉडिआनी, (1972), *इंटरनेशनल बिजनेस : ऐन इंट्रोडक्शन टू दि वर्ल्ड ऑफ दि मल्टिनेशनल फर्म,* न्यू जर्सी, ईगलवूड प्रेस।

हेल्ड, डेविड एण्ड मैकग्रेव, ऐन्थॉनी (2003), *दि ग्लोबल ट्रांस्फॉर्मेशन रीडर : ऐन इंट्रोडक्शन टू दि ग्लोबलाइजेशन डिबेट,* कैम्ब्रिज : पॉलिटी प्रेस।

हेर्ज, थॉमस (1951), *पॉलिटिकल रियलिज्म एण्ड पॉलिटिकल आइडियलिज्म : ए स्टडी ऑफ थियरीज एण्ड रियलिटीज,* चिकागो : यूनिवर्सिटी ऑफ चिकागो प्रेस।

हेवूड, ऐण्ड्रयू, (2007), *पॉलिटिक्स,* हैम्शायर : पालग्रेव मैकमिलन।

हेवूड, ऐण्ड्रयू, (2015), *ग्लोबल पॉलिटिक्स,* पालग्रेव मैकमिलन, न्यू यॉर्क।

हर्स्ट, पी. एण्ड थॉम्पसन, जी., (1999), *ग्लोबलाइजेशन इन क्वेश्चन,* कैम्ब्रिज : कैम्ब्रिज पॉलिटी प्रेस।

हाफब्स, थॉकस, 1994 (1660), *लेवियेथन,* ऐडविन क्योर्ली (ऐडिटेड) इण्डियानापोलिस : हैकेट।

हॉब्सबॉन, ऐरिक (1996), *दि एज ऑफ रिवॉल्यूशन 1789–1848,* न्यू यॉर्क : विंटेज।

होएकमैन, बेर्नार्ड एण्ड माइकेल कोस्टीकि (2001), *दि पॉलिटिक्स इकोनॉमी ऑफ दि वर्ल्ड ट्रेडिंग सिस्टम : फ्रॉम गेट (जीएटीटी) टू डब्ल्यूटीओ,* न्यू यॉर्कः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

हॉफमैन, स्टैन्ले (1981), *ड्यूटीज बियॉण्ड बॉर्डर्स : ऑन दि लिमिट्स एण्ड पॉसिबिलिटीज ऑफ ऐथिकल इंटरनेशनल पॉलिटिक्स,* सिरैक्यूज यूनिवर्सिटी प्रेस।

हॉल्टोन, रॉबर्ट (2000), ग्लोबलाइजेशन'ज कल्चरल कंसीक्वेंसेज, *अमेरिकन एकेडेमी ऑफ पॉलिटिकल एण्ड सोशल साइंस,* वॉल्यूम–570, जुलाई, 140–152

होलूम, जॉन डी., (1999), ''दि प्रोलिफरेशन ऑफ वीपन्स ऑफ मास डिस्ट्रक्शन : चैलेंजेज एण्ड रिस्पॉन्सेज, यू.एस. फॉरेन पौलिसी एजेण्डा'', *वर्ल्ड ओपीनियन ऑन प्रोलिफरेशन ऑफ वीपन्स ऑफ मास स्ट्रिक्शन, यूएसआईए इलेक्ट्रोनिक्स जर्नल्स,* वॉल्यूम–4, नं.2

होपवैल, क्रिस्टन (2016), *ब्रेकिंग दि डब्ल्यूटीओ : हाउ इमर्जिंग पावर्स डिस्रप्टेड दि नियो–लिबरल प्रोजेक्ट,* कैलीफोनिर्या : स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

हड्सन, ऐलन, (1998), ''बियोण्ड दि बॉर्डर्स : ग्लोबलाइजेशन, सावरींटी एण्ड एक्स्ट्रा–टेरिटोरियलिटी'', *जियोपॉलिटिक्स,* वॉल्यूम–3, नं.1

हंटिंग्टन, सैमुएल (1996), *क्लैश ऑफ सिविलाइजेशन,* न्यू यॉर्क : सिमोन एण्ड शस्टर।

इंडिया'ज पोजिशन ऑन लीगल स्टेटस ऑफ रिफ्यूगीज, इंट्रोडक्शन, 2010, अवेलेबल ऐट : http://shodhganga.inflibnet.ac.in/bitstream/10603/128419/12/09_chapter%201.pdf

इंटरनेशनल ऑर्गेनाइजेशन फॉर माइग्रेशन (आईओएम), वर्ल्ड माइग्रेशन रिपोर्ट, 2018, अवेलेबल ऐट : https://publications.iom.int/system/files/pdf/wmr_2018_en.pdf

इंटरनेशनल ऑर्गेनाइजेशन फॉर माइग्रेशन (आईओएम), वर्ल्ड माइग्रेशन रिपोर्ट, 2011 https://publications.iom.int/system/files/pdf/wmr2011_english.pdf

आईओएम'ज स्ट्रैटजी टू इनेबल, इंगेज एण्ड इम्पावर डायस्पोरा, आईओएम, जीनेवा, 2017, अवेलेबल ऐट : https://diaspora.iom.int/ioms-strategy-enable-engage-and-empo wer-diaspora.

इप्सोस, एमओआरआई, *पर्सेप्शंस आर नॉट रियलिटी : व्हाट दि वर्ल्ड गेट्स रॉन्ग, दिसंबर 2016*, अवेलेबल एट : www.ipsos.com/ipsos-mori/en-uk/perceptions-are-not-reality-what-world-gets-wrong?language_content_entity=en-uk.

जैक्सन, रॉबर्ट एण्ड जॉर्ज सोरेन्सन (2003), *इंट्रोडक्शन टू इंटरनेशनल रिलेशंस : थियरीज एण्ड एप्रोचेज*, ऑक्सफोर्ड : ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

काल्दोर, मैरी (2000), 'सिविलाइजिंग ग्लोबलाइजेशन : दि इम्प्लिकेशंस ऑफ दि बैटल ऑफ सैटल', *मिलेनियम : ए जर्नल ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज*, 29/4 : 105–14

केआन, जे., (2003), *ग्लोबल सिविल सोसाइटी?,* कैम्ब्रिज : कैम्ब्रिज : यूनिवर्सिटी प्रैस।

केन्नन, जॉर्ज एफ., (1951), *रियलिटीज ऑफ अमेरिकन फोरेन पॉलिसी,* प्रिंसटन : प्रिंसटन : यूनिवर्सिटी प्रैस।

कोहेन, रॉबर्ट ओ' एण्ड जोसेफ न्ये (1977), *पावर एण्ड इंडिपेंडेंस : वर्ल्ड पॉलिटिक्स इन ट्रांजिशन,* बोस्टन : हॉटन मिफिन।

कोहेन, रॉबर्ट ओ' (1989), *इंटरनेशनल इंस्टीच्यूशन एण्ड स्टेट पावर : ऐस्सेज इन इंटरनेशनल रिलेशंस थियरी,* बॉल्डर : वेस्टव्यू।

खग्राम, संजीव, जेम्स रिकेर, एण्ड कैथ्रीन सिक्किंक, (2002), *''फ्रॉम सैंशियागो टू सीट्ल'' : ट्रांसनैशनल एड्वोकेसी ग्रुप्स रिस्ट्रक्चरिंग वर्ल्ड पॉलिटिक्स*, इन रिस्ट्रक्चरिंग वर्ल्ड पॉलिटिक्स, ट्रांसनैश्नल सोशल मूवमेंट्स, नेटवर्क्स, एण्ड नॉर्म्स, ऐडिटेड एस. खग्रम, जे. रिकेर एण्ड के. सिक्किंक, मिन्निापोलिस : यूनिवर्सिटी ऑफ मिन्निएसोटा प्रैस।

खोर, मार्टिन, (2001), ''ग्बलाइजेशन एण्ड सस्टेनेबल डेवलपमेंट : दि च्वाइसेज बिफोर रियो+10'' *इंटरनेशनल रिव्यू फॉर इंवायरमेंट स्ट्रैटजीज*, वॉल्यूम–2, नंबर–2

किंग, गैरी, एण्ड क्रिस्टोफर मुर्रे, रिथिंकिंग ह्यूमन सिक्यूरिटी, *पॉलिटिकल साइंस क्वार्टर्ली,* वॉल्यूम–116, नं.64

कोराब–कार्पोविक्ज, डब्ल्यू, जुलिआन (2012), *ऑन हिस्ट्र ऑफ पॉलिटिकल फिलोसफी : ग्रेट पॉलिटिकल थिंकर्स फ्रॉम थ्यूसीडाइड्स टू लॉके,* न्यू यॉर्क : रूटलेज।

कोराब–कार्पोविक्ज, डब्ल्यू, जुलिआन (2012), *ट्रैक्टेटस पॉलिटिको–फिलोसोफिकस : न्यू डायरेक्शंस फॉर दि डेवलपमेंट ऑफ ह्यूमनकाइंड,* न्यू यॉर्क : रूटलेज।

कोसेर, के., (2010), डायमेंशंस एण्ड डायनामिक्स ऑफ इर्रेग्युलर माइग्रेशन, *पॉप्युलेशन, स्पेस एण्ड प्लेस*, 16, 3

कुमार चंचल, लंगथुइयांग रियामेई एण्ड संजू गुप्ता (2017), *अण्डर्स्टैंडिंग ग्लोबल पॉलिटिक्स,* न्यू डेल्ही : के डब्ल्यू पब्लिशर्स प्रा. लि.।

Kurian, V Mathew (2007). "Alternatives to Globalisation: A Search' in *Mainstream*, Vol XLV, No 35, Saturday 18 August 2007,

कुरिआन, वी. मैथ्यू (2007), ''अल्टरनेटिव्स टू ग्लोबलाइजेशन : ए सर्च इन *मेंन्स्ट्रीम,* वॉल्यूम–एक्सएलवी, नं.35, सैचर्डे 18 अगस्त, 2007

लेबो रिचर्ड, नेड (2003), *दि ट्रैजिक विजन ऑफ पॉलिटिक्स ऐथिक्स, इंटरेस्ट एण्ड ऑर्डर्स, कैम्ब्रिज : कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।*

लिंकलेटर, एण्ड्रयू (1990), *बियॉण्ड रियलिज्म एण्ड मार्क्सिज्म : क्रिटिकल थियरी एण्ड इंटरनेशनल रिलेशंस,* बेसिंग्स्टोक : मैकमिलन।

मैकियावेली, निकोलो (1515), *दि प्रिंस,* अनुवादक – हार्वे सी. मैन्सफील्ड, जूनियर, चिकागो : चिकागो यूनिवर्सिटी प्रेस, 1985

मैकियावेली, निकोलो (1531), *दि डिस्कोर्स,* वॉल्यूम–2, अनुवादक – लेस्ली जे. वाल्कर, लन्दन : रूटलेज, 1975

मैसिन्टायरे, ऐन्थॉनी जी., जॉज डब्ल्यू. क्रिस्टोफर, ऐडवर्ड ईटजेन, जूनियर, ऐट. आल. (2000), *वीपन्स ऑफ मास डिस्ट्रक्शन इवेंट्स विद कॉन्टामिनेटेड कैजुअल्टीज इफैक्टिव प्लानिंग फॉर हेल्थ केयर फैसिलिटीज,* जामा, जनवरी 12

महबूब–उल–हक़, (1999), *रिफ्लेक्शंस ऑन ह्यूमन डेवलपमेंट,* लंदन : ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

मैन्सफील्ड, हार्वे, सी. जूनि. (1979), *मैकियावेल्ली'ज न्यू मोड्स एण्ड ऑर्डर्स : ए स्टडी ऑफ दि डिस्कोर्स ऑन लिवी,* इथाका, कॉर्नेल यूनिवर्सिटी प्रेस।

मैन्सफील्ड, हार्वे, सी. जूनि. (1996), *मैकियावेल्ली'ज वर्च्यू,* चिकागो : यूनिवर्सिटी ऑफ चिकागो प्रेस।

Maxwell, Mary, 1990. *Morality among Nations: An Evolutionary View*, Albany: State University of New York Press.

मैक्सवेल, मैरी (1990), *मोरैलिटी एमंग नेशंस : ऐन इवॉल्यूशन्री व्यू,* एल्बेनी : स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ न्यू यॉर्क प्रेस।

मीनेके, फ्रेडरिच, (1998), *मैकियावेल्लिज्म : दि डॅक्ट्राइन ऑफ रेजन डी'ऐटेट इन मॉर्डन हिस्ट्री,* अनुवादक – डग्लस स्कॉट, न्यू ब्रुन्स्विक, एनजे : ट्रांजेक्शन पब्लिशर्स।

Migration Advisory Committee, (2014), *Migrants in Low-Skilled Work: The Growth of EU and Non-EU Labour in Low-Skilled Jobs and its Impact on the UK*, London.

माइग्रेशन ऐडवाइजरी कमिटी (2014), *माइग्रेंट्स इन लो–स्किल्ड वर्क : दि ग्रोथ ऑफ ईडब्ल्यू एण्ड नॉन–ईडब्ल्यू लेबर इन लो–स्किल्ड जॉब्स एण्ड वलक इम्पैक्ट ऑन दि यूके,* लन्दन।

मॉडेल्स्की, जॉर्ज, (1979), ''ट्रांसनेशनल कॉर्पोरेशंस एण्ड दि वर्ल्ड ऑर्डर इन जॉर्ज मॉडेल्स्की, ऐडिटेड, *ट्रांसनेशनल कॉर्पोरेशंस एण्ड वर्ल्ड ऑर्डर,* चिकागो : यूनिवर्सिटी ऑफ चिकागो प्रेस।

मोर्गेन्थन, हैन्स जे., (1946), *साइंटिफिक मैन वर्सेज पावर पॉलिटिक्स,* चिकागो : यूनिवर्सिटी ऑफ चिकागो प्रेस।

Morgenthau, Hans J., 1951. *In Defense of the National Interest: A Critical Examination of American Foreign Policy*, New York: Alfred A. Knopf.

मोर्गेन्थन, हैन्स जे., (1951), *इन डिफेंस ऑफ दि नेशनल इंटरेस्ट : ए क्रिटिकल इक्जामिनेशन ऑफ अमेरिकन फॉरेन पॉलिसी,* न्यू यॉर्क : एल्फर्ड ए. नॉफ

मोर्गेन्थन, हैन्स जे., (1954), *पॉलिटिक्स अमंग नेशंस : दि स्ट्रगल फॉर पावर एण्ड पीस,* सेकण्ड ऐडिशन, न्यू यॉर्क : एल्फर्ड ए. नॉफ

मोर्गेन्थन, हैन्स जे., (1970), *ट्रूथ एण्ड पावर : ऐस्सेज ऑफ ए डिकेड्स 1960–1970,* न्यू यॉर्क : प्रीगेर।

नार्दिन, टैरी एण्ड डेविड आर. मैपेल (1992), *ट्रेडिशंस इन इंटरनेशनल ऐथिक्स,* कैम्ब्रिज : कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।

नाउ, हेनरी आर., (2009), *पर्सपेक्टिव ऑन इंटरनेशनल रिलेशंस,* वाशिंगटन डीसी : सीक्यू प्रैस।

नायर, दीपक, (ऐडिट) (2002), *गवर्निंग ग्लोबलाइजेशन : इश्यूज एण्ड इंस्टीच्यूशंस,* ऑक्सफोर्ड : ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

नीबुहर, रीनहोल्ड (1932), *मोरल मैन एण्ड इम्मोरल सोसाइटी : ए स्टडी ऑफ ऐथिक्स एण्ड पॉलिटिक्स,* न्यू यॉर्क : चार्ल्स स्क्राइबर'ज संस।

नीबुहर, रीनहोल्ड (1944), *दि चिल्ड्रेन ऑफ लाइट एण्ड दि चिल्ड्रेन ऑफ डार्कनेस : ए विन्डीकेशन ऑफ डैमोक्रेसी एण्ड ए क्रिटिक ऑफ इट्स ट्रैडिशनल डिफेंस,* न्यू यॉर्क : चार्ल्स स्क्राइबर'ज संस।

न्ये, जोसेफ एस. एण्ड जॉन डी. डोनाहुए (ऐडिटर्स) (2000), *गवर्नेंस इन ए ग्लोबलाइजिंग वर्ल्ड,* वॉशिंगटन, डी.सी. : ब्रूकिंग्स इंस्टीच्यूशन प्रेस।

ऊमेन, जी.जेड., (2015), साउथ उशिया–गल्फ माइग्रेट्री कॉरिडोर : इमर्जिंग पैटर्न्स प्रोस्पेक्ट्स एण्ड चैलेंजेज, *माइग्रेशन एण्ड डेवलपमेंट,* 5, 3, 2015

ऑर्गेनाइजेशन फॉर इकोनॉमिक कॉ–ऑपरेशन एण्ड डेवलपमेंट (ओईसीडी), दि फिस्कल इम्पैक्ट ऑफ इमिग्रेशन इन ओईसीडी कंट्रीज, इन *इंटरनेशनल माइग्रेशन आउटलुक 2013,* ओईसीडी, पैरिस, 2013

ओज़्कन, गोखन (2012), ''इमर्जेंस ऑफ इंटरनेशनल पॉलिटिकल इकोनॉमी ऐज ए सब–डिस्सिप्लीन ऑफ इंटरनेशनल रिलेशंस एण्ड इम्पैक्ट ऑफ दि ग्लोबल क्राइसेज ऑन इंटरनेशनल पॉलिटिकल इकोनॉमी'', *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ बिजनेस एण्ड सोशल साइंस,* वॉल्यूम–3, नं.3, जुलाई, पीपी.198–204

पॉल, डैरेल ई. एण्ड अब्ला आमावी, (ऐडिटर्स), (2013), *दि थियरेटिकल इवॉल्यूशन ऑफ इंटरनेशनल पॉलिटिकल इकोनॉमी : ए रीडर,* न्यू यॉर्क : ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

पेडनेकर, समीक्षा, (2016), ''दि इम्पैक्ट ऑफ इंटरनेशनल इंस्टीच्यूशंस ऑन दि आइडिया ऑफ सावरींटी'', *लिंकेडिन,* जुलाई 20, https://www.linkedin.com/pulse/impact-international-institutions-idea-sovereignty-samiksha-pednekar.

पीटर्से, जैन नैडरवीन (2015), *ग्लोबलाइजेशन एण्ड कल्चरत : ग्लोबल मेलैंज,* लैनहैम, बॉल्डर, न्यू यॉर्क, लन्दन : रॉमैन एण्ड लिटलफील्ड।

पीटर्से, जैन (1995), ग्लोबलाइजेशन ऐज हाइब्रिडाइजेशन, इन *ग्लोबल मॉडर्निटीज,* (ऐडिटेड) माइक फीदर्स्टोन, एस. लैश, रॉनाल्ड रॉबर्टसन, लंदन : सेज पब्लिकेशंस।

पोकोक, जे. सी. ए. (1975), *दि मैकियावेलिआन मूवमेंट : फ्लोरेंटाइन पॉलिटिकल थॉट एण्ड दि ऐटलांटिक पॉलिटिकल ट्रैडिशन,* प्रिंसटन : प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस।

राव, एम. बी. एण्ड मंजुला गुरु (2001), *डब्ल्यूटीओ एण्ड इंटरनेशनल ट्रेड,* न्यू डेल्ही : विकास पब्लिशिंग हाउस।

राव, पी.के. (2000), *दि वर्ल्ड ट्रेड ऑर्गेनाइजेशन एण्ड दि इन्वायरन्मेंट,* न्यू यॉर्क : स्टी. मार्टिन'ज प्रेस।

रिंगमैर, ऐरिक (2017), ''दि मेकिंग ऑफ दि मॉर्डन वर्ल्ड'', इन स्टीफेन मैकग्लिंचे, ऐडिटेड *इंटरनेशनल रिलेशंस,* ब्रिस्टल : इ–इंटरनेशनल रिलेशंस पब्लिशिंग।

रिट्जर, जॉर्ज, (2010), *ग्लोबलाइजेशन : ए बेसिक टेक्स्ट,* सूसेक्स : विली ब्लैकवेल।

रॉबर्टसन, रोनाल्ड (1992), ग्लोबलाइजेशन : सोशल थियरी एण्ड ग्लोबल कल्चर, लन्दन, थाउजैण्ड ऑक्स, न्यू डेल्ही : सेज पब्लिकेशंस।

रोजनाउ, जेम्स एन. एण्ड मैरी डुर्फी (1995), *थिंकिंग थियरी थ्रोली : कोहरेंट ऐप्रोचेज टू ऐन इनकोहरेंट वर्ल्ड, बूल्डर : वेस्टव्यू।*

रस्सेल, ग्रेग (1990), *हेन्स जे. मोर्गेन्थाउ एण्ड दि ऐथिक्स ऑफ अमेरिकन स्टेटक्राफ्ट,* बेटन रूज : लूईसियाना स्टेट यूनिवर्सिटी प्रेस।

रियान, ऐलन (1993), ''लिबरलिज्म'', पीपी.291–311 इन रॉबर्ट ई. गुड एण्ड फिलिप पेट्टी ऐडिटर्स, *ए कम्पैनियन टू कंटेम्पोररी पॉलिटिकल फिलोसफी,* ऑक्सफोर्ड : ब्लैकवैल।

साच्स, वॉल्फगेंग, (1999), *प्लांट डयलेक्टिक्स : इक्स्प्लोरेशंस इन इन्वायारमेंट एण्ड डेवलपमेंट,* लन्दन : जेड बुक्स।

सैगन, स्कॉट डी. (2009), ''दि कॉजेज ऑफ न्यूक्लियर वीपन प्रोलिफरेशन'', *ऐनुअल रिव्यू ऑफ पॉलिटिकल साइंस*।

सैम्पसन, ग्रे पी., (ऐडिट) (2001), *दि रोल ऑफ दि वर्ल्ड ट्रेड ऑर्गेनाइजेशन इन ग्लोबल गवर्नेंस,* न्यू यॉर्क : दि यूएन यूनिवर्सिटी प्रेस।

सरूशी, डैन, (2010), *इंटरनेशनल ऑर्गेनाइजेशंस एण्ड देयर ऐक्सरसाइज़ ऑफ सावरीन पावरर्स,* ऑक्सफोर्ड, यू.के.।

एस., विलियम (2011), *दि रियलिस्ट केस फॉर ग्लोबल रिफॉर्म,* कैम्ब्रिज : पॉलिटी।

एस., विलियम (2014), *ग्लोबलाइजेशन,* इन स्टैनफोर्ड इंसाइक्लोपीडिया ऑफ फिलोसफी रिट्राइव फ्रॉम http://www.bibme.org/citation-guide/apa/website/

शॉल्टे, जे.ए. (2005), *ग्लोबलाइजेशन : ए क्रिटिकल इंट्रोडक्शन,* लंदन : पालग्रेव।

शल्ट्ज, जॉर्ज पी., विलियम जे. पैरी, हेनरी ए. किस्सिंगेर एण्ड सैम नुन्न (2007), ''ए वर्ल्ड फ्री ऑफ न्यूक्लियर वीपन्स'', *वाल स्ट्रीट जर्नल,* जनवरी।

स्लीट, मैट्ट (2013), *लिबरल रियलिज्म : ए रियलिस्ट थियरी ऑफ लिबरल पॉलिटिक्स,* मैनचेस्टर : मैनचेस्टर यूनिवर्सिटी प्रेस (स्कॉलर)।

स्मिथ, स्टीव केन, बूथ एण्ड मैरीसिया जैलव्स्की (ऐडिटर्स) (1996), *इंटरनेशनल थियरी : पॉजिटिव एण्ड बियॉण्ड,* कैम्ब्रिज : कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।

सोमाविया, जुआन, (1999), *पीपल'ज सिक्यूरिटी–ग्लोबलाइजेशन सोशल प्रोग्रेस,* आईएलओ।

स्पेथ, जेम्स गस्टेव, (2004), *ग्लोबल इन्वायरमेंट चैलेंजेज, ट्रांजिशंस टू ए सस्टेनेबल वर्ल्ड,* येल : येल यूनिवर्सिटी प्रेस।

श्रीवास्तव, आर. एण्ड ए. पाण्डेय, (2017), *इंटरनल एण्ड इंटरनेशनल माइग्रेशन इन साउथ एशिया : ड्राइवर्स, इंटरलिंकेज एण्ड पॉलिसी इश्यूज,* यूनाइटेड नेशंस ऐडुकेशनल, साइंटिफिक एण्ड कल्चरल ऑर्गेनाइजेशन, न्यू डेल्ही।

स्टेगेर, मैनफ्रेड बी. (2017), *ग्लोबलाइजेशन : ए वैरी शॉर्ट इंट्रोडक्शन,* यूके : ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

स्ट्रॉंग, मॉरिस (2001), *व्हैर ऑन अर्थ आर वी गोइंग,* न्यू यॉर्क : टैक्सेयर।

थॉम्पसन, कैन्नेथ डब्ल्यू. (1980), *मास्टर्स ऑफ इंटरनेशनल थॉट,* बेटन रूज : लोउइसिआना स्टेट यूनिवर्सिटी प्रेस।

थॉम्पसन, कैन्नेथ डब्ल्यू. (1985), *मोरलिज्म एण्ड मोरेलिटी इन पॉलिटिक्स एण्ड डिप्लोमैसी,* लानहैम, एम.डी. : यूनिवर्सिटी प्रेस ऑफ अमेरिका।

थॉरसेन, डैग ईनैर एण्ड ऐमुण्ड ली (2009), *व्हाट इज नियोलिबरलिज़्म?* वर्किंग पेपर, यूनिवर्सिटी ऑफ ओस्लो, www.folk.uio.no/daget/neoliberalism.pdf

यूएन हाई कमिश्नर फॉर रिफ्यूजीज (यूएनएचसीआर) *ग्लोबल ट्रेंड्स : फोर्स्ड डिस्प्लेसमेंट इन 2017,* जीनेवा, 2017

यूएनसीटीएडी, (2007), *दि यूनिवर्स ऑफ दि लार्जेस्ट ट्रांसनेशनल कॉर्पोरेशंस,* न्यू यॉर्क : यूनाइटेड नेशंस पब्लिकेशंस. http://unctad.org/en/Docs/iteiia20072en.pdf

यूएनसीटीएडी, (2013), ''ग्लोबल वैल्यू चेन्स : इन्वेस्टमेंट एण्ड ट्रेड फॉर डेवलपमेंट'' इन *वर्ल्ड इन्वेस्टमेंट रिपोर्ट 2013.* http://unctad.org/en/PublicationsLibrary/wir2013en.pdf ,

यूएनसीटीएडी, (2017), ''इन्वेस्टमेंट एण्ड दि डिजिटल इकोनॉमी'', *वर्ल्ड इन्वेस्टमेंट रिपोर्ट 2017*, http://unctad.org/en/PublicationsLibrary/wir2017_en.pdf

वैस्क्यूएज, जॉन ए., (1998), *दि पावर ऑफ पावर पॉलिटिक्स : फ्रॉम क्लासिकल रियलिज्म टू नियोट्रैडिशनलिज्म,* कैम्ब्रिज : कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।

विनोद, एम. जे. एण्ड देशपाण्डे, एम., (2013), *कंटेम्परेरी पॉलिटिकल थियरी,* न्यू देल्ही : पीएचआई लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड।

वालिद, अब्दुलरहीम (एन.डी.), 'स्टेट ज्यूरिस्डिक्शन', *प्राइवेट साइट फॉर लीगल रिसर्च एण्ड स्टडीज।* https://sites.google.com/site/walidabdulrahim/home/my-studies-in-english/7-state-jurisdiction.

वालर्स्टीन, इम्मेनुएल (1990), कल्चर ऐज दि आइडियोलॉजिकल बैटलग्राउण्ड ऑफ दि मॉर्डन वर्ल्ड सिस्टम, *थियरी, कल्चर एण्ड सोसाइटी,* 7 : 257–81

वाल्ट्ज, कैन्निथ (1979), *थियरी ऑफ इंटरनेशनल पॉलिटिक्स,* बोस्टन, एम.ए., मैक्ग्रा–हिल।

वाल्ट्ज, कैनेथ (1999), ''ग्लोबलाइजेशन एण्ड गवर्नेंस'', इन *पीएस : पॉलिटिकल साइंस एण्ड पॉलिटिक्स,* वॉल्यूम, नं.4 : 693–700

वालज़ेंबैक, गुण्टर (2017), ''ग्लोबल पॉलिटिकल इकोनॉमी'' इन स्टीफेन मैकग्लिंचे, ऐडिटेड *इंटरनेशनल रिलेशंस,* ब्रिस्टल : इ–इंटरनेशनल रिलेशंस पब्लिशिंग।

वाल्जेर, माइकेल (1977), *जस्ट एण्ड अनजस्ट वार्स : ए मोरल ऑर्ग्यूमेंट विद हिस्टोरिकल इलिस्ट्रेशंस,* न्यू यॉर्क : बेसिक बुक्स।

वांग, यी (2007), ग्लोबलाइजेशन इन्हांसेज कल्चरल आइडेंटिटी, *इंटरकल्चरल कम्यूनिकेशन स्टडीज,* XVI, 83-86

वीवर, ओले (1996), ''दि राइज एण्ड दि फाल ऑफ दि इंटर–पैराडाइम डिबेट'', इन *इंटरनेशनल थियरी : पोजिटिविज्म एण्ड बियॉण्ड,* स्टी स्मिथ, केन बूथ एण्ड मैरीसिआ जालेव्स्की (ऐडिटर्स), कैम्ब्रिज : कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 149–185

वेन्ड्ट, ऐलेक्जेण्डर, 1987 (1999), *सोशल थियरी ऑफ इंटरनेशनल पॉलिटिक्स,* कैम्ब्रिज : कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।

वेन्ड्ट, ऐलेक्जेण्डर, (1987), ''ऐनार्की इज व्हाट स्टेट्स मेक ऑफ इट : दि सोशल कंस्ट्रक्शन ऑफ पावर पॉलिटिक्स'', *इंटरनेशनल ऑर्गेनाइजेशन,* 46 : 391–425

वाइट, वार्टिन (1991), *इंटरनेशनल थियरी : थ्री ट्रैडिशंस,* लीसेस्टर : यूनिवर्सिटी ऑफ लीसेस्टर प्रेस।

विलकिंस, मीरा, (1991), ''यूरोपीयन एण्ड नॉर्थ अमेरिकन मल्टिनेशनल्स, 1870–1914 : कम्पैरिजन एण्ड कॉन्ट्रास्ट'', इन मीरा विल्किंस, ऐडिटेड, *दि ग्रोथ ऑफ मल्टिनेशनल्स,* मस्साच्यूसेट्टस : ऐडवर्ड एल्गार पब्लिशिंग।

विलकिंस, मीरा, (1991), ''मॉडर्न यूरोपीयन इकोनॉमिक हिस्ट्री एण्ड दि मल्टीनेशनल्स'', इबिड।

विलकिंस, मीरा, (2005), ''मल्टिनेशनल इंटरप्राइज टू 1930 : डिस्कन्टीन्यूटीज एण्ड कंटीन्यूटीज'', इन ऐल्फर्ड डी. चैन्डलर जूनियर एण्ड ब्रूस मज़लिश ऐडिटर्स, *लेवियाथंस : मल्टिनेशनल कॉर्पोरेशंस एण्ड दि न्यू ग्लोबल हिस्ट्री,* न्यू यॉर्क : कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।

विल्किंसन, रॉरडेन (2006), दि डब्ल्यूटीओ : क्राइसिस एण्ड दि गवर्नेंस ऑफ ग्लोबल ट्रेड, ऐबिंग्डन, यू.के. : रूटलेज।

विलियम्स, बेर्नार्ड (1985), ऐथिक्स एण्ड दि लिमिट ऑफ फिलोसफी, कैम्ब्रिज : कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।

विलियम्स, बेर्नार्ड (2005), ''रियलिज्म एण्ड मोरलिज्म इन पॉलिटिकल थियरी'', इन *इन दि बिगनिंग वज दि डीड : रियलिज्म एण्ड मोरलिज्म इन पॉलिटिकल ऑर्ग्यूमेंट,* (ऐडिटेड) जी. हाथ्रॉन, प्रिंसटन : प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस।

विलियम्स, मैरी फ्रांसेज, (1998), *ऐथिक्स इन थ्यूसीडवइड्स : दि ऐंशिएंट सिम्प्लीसिटी,* लैनहैम, एम.डी., यूनिवर्सिटी प्रेस ऑफ अमेरिका।

Williams, Michael C., 2005. *The Realist Tradition and the Limit of International Relations*, Cambridge: Cambridge University Press.

विलियम्स, माइकेल सी. (2005), *दि रियलिज्म ट्रैडिशन एण्ड दि लिमिट ऑफ इंटरनेशनल रिलेशंस, कैम्ब्रिज : कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।*

विलियम्स, माइकेल सी. (2007), *रियलिज्म रिकंसिडर्ड : दि लिगेसी ऑफ हैन्स मोर्गेन्थाउ इन इंटरनेशनल रिलेशंस, ऑक्सफोर्ड : ओयूपी।*

विलियम्स, रेमण्ड (1976), *सीवर्ड्स,* लंदन : फ्लैमिंगो।

Wohlforth, William C., 2008. "Realism," *The Oxford Handbook of International Relations*, Christian Reus-Smit and Duncan Snidal (eds.), Oxford: Oxford University Press.

वॉह्लफोर्थ, विलियम, (2008), ''रिलिज्म'', *दि ऑक्सफोर्ड हैण्डबुक ऑफ इंटरनेशनल रिलेशंस,* क्रिश्चियन रियूज–स्मिट एण्ड डंकैन स्निडैल (ऐडिटर्स), ऑक्सफोर्ड : ओयूपी।

वॉह्लफोर्थ, विलियम सी. (2011), ''गिल्पिनियन रियलिज्म एण्ड इंटरनेशनल रिलेशंस'', *इंटरनेशनल रिलेशंस,* 25 (4) 499–511

वर्ल्ड बैंक (2018), ''ऑर्गेनाइजेशन', http://www.worldbank.org/en/about/leadership

वर्ल्ड बैंक (2016), *माइग्रेशन एण्ड डेवलपमेंट : ए रोल फॉर दि वर्ल्ड बैंक ग्रुप,* वॉशिंगटन, डी.सी.।